॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

छन्दोर्णवपिंगल।

श्रीमत्सकलकविकुलसरसिजवनप्रकाशनदिवाकरश्री-
रामचन्द्रभक्तिप्रकाशितान्तःकरणप्रतापगढदे-
शीयटयौंगाग्रामवासिभिषारीदासकृत.

जिसमें

मात्रावृत्त वर्णवृत्त मेरु मर्कटी पताका और प्रति छन्द लघु गुरु गणस्थापनरीति और अति रमणीयछन्दोंके उदाहरण, हिन्दी भाषा कवित्व रसिकोंके उपकारार्थ अति सुगमतासे वर्णित हैं.

वही

बम्बई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज " श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेसमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९७१ शके १८३६.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७वीं गली खम्बाटा लैन स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

श्रीगणेशाय नमः।

अथ छन्दोर्णवपिंगलकी विषय छन्दनामानुक्रमणिका।

इग्यारहवां तरंग ११.

वर्णसवैया प्रकरण ।

बारहवाँ तरंग १२.

संस्कृतयोग्यपद्यवर्णन ।

इति छन्दोर्णवपिङ्गलस्थविषय छन्दनामाऽनुक्रमणिका समाप्ता ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ
छन्दोर्णवपिंगल।

अथ मंगलाचरण।

त्रिभंगीछन्द।

करिवदनविमंडित ओजअखंडित पूरणपण्डित ज्ञानपरं। गिरिनन्दिनिनन्दन असुरनिकन्दन सुरउर चन्दन कीर्तिकरं॥भूषणमृगलक्षण वीरविचक्षण जनप्रणरक्षण पाशधरं। जय जय गणनायक खलगणघायक दाससहायक विघनहरं॥ १॥

दण्डक छन्द।

एक रद है न शुभ्र शाखा बढि आई लम्बोदर में विवेकतरु जो है शुभ्र वेशको।शुण्डादण्ड कै तव हथ्यारु है उदण्ड यह राखत न लेश अघ विघन अशेषको॥ मद कहौ भूलि न झरत सुधासार यह ध्यानहीं तेहिको हढ हरण कलेशको। दास गृह विजन विचारो तिहूं तापनिको दूरि करने को वारो करण गणेशको॥ २॥

छप्पै।

श्रीविनतासुत देखि परम पटुता जिन्ह कीन्हेउ।

छन्दभेद प्रस्तार बरणि बातनि मन लीन्हेउ ॥
नष्टोद्दिष्टनि आदि रीति बहु बिधि जिन साख्यो ।
जैबो चलत जनाय प्रथम वाचापन राख्यो ॥
जो छन्द भुजंगप्रयात कहि जात भयो जहँ थलअभय।
तिहिपिंगलनागनरेशकीसदाजयतिजयजयतिजय॥३॥

दोहा ।

जिन प्रगटचो जगमें विविध, छन्द नाम अभिराम ।
ताहि विष्णुरथको करों, बिबि कर जोरि प्रणाम ॥४ ॥

कवित्त ।

अभिलाषा करी सदा ऐसनिका होय ब्रित्थ सब ठौर दिन सब याही सेवा चरण चानि । लोभालई नीचै ज्ञान हलाहलहीको अंसु अंत है क्रिया पाताल निंदा रसहीको खानि॥सेनापति देवीकर शोभा गनतीको भूप पन्ना मोती हीरा हेम सौदा हाँसहीको जानि । हीयपर देव परवदे यश रटै नाउं खगासवन नगधर सीतानाथको लापानि ॥ ५ ॥

दोहा ।

या कवित्त अंतरचरण, लै तुकंत द्वै छंडि ।
दास नाम कुल ग्राम कहि, नाम भगतिरस मंडि॥६॥
प्राकृत भाषा संसकृत, लखि बहु छन्दोग्रन्थ ।
दास कियो छन्दोरणव, भाषा रचि शुभ पंथ ॥ ७ ॥

विजय। ।

दास गुरू लघुगोठ हहै हगनाथनि भेदनि उच्चारि जानै । जानै गनागनको फल मत्त बरन्न पथारनिको करि जानै ॥ नष्ट उद्दिष्ट रु मेरु पताक बिमर्कटि सूचिनको भरि जानै । वृत्ति औ जाति समुक्तक दण्डक छन्द महोदधि सो तरि जानै ॥ ८ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मंगलाचरणवर्णनं प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

अथ गुरुलघुविचार ।

दंडक ।

ई ऊ आ ये आदि स्वर वरण मिलेहू एहू बिन्दुयुक्त औ सँयुक्तपर गुरु बंक खांचि । अ इ उ क कि कु ऐसे लघु सूधे विधि कीन्हो कहति अक्षरनि जो रसना बुतहि नांचि ॥ रहल ये संयुक्त वरन न्हपरे न मानि नित्यै गुरु लघु लघु गुरुको गुरू वै बांचि । एक मत्त लहु भनि गुरुको दुमत्त गनि याहीमें उदाहरण हेरि ले हृदयमें जांचि ॥ १ ॥

प्राकृते—यथा ।

अरेरे वाहहिकान्ह नाव छोटि डगमगकुगति न देहि ॥
तैं इथनै संतारि दे जो चाहहि सो लेहि ॥ २ ॥

दोहा ।

कहुं कहुं सुकवि तुकंतमें, लघुको गुरु गनि लेत ॥
गुरुहूको लघु गनत हैं, समुझत सुमति सचेत ॥ ६ ॥

गुरुको लघु, यथा-संस्कृत श्लोक ।

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं कूर्मो बिभर्त्ति धरणीं खलु पृष्ठकेन ॥ अंभोनिधिर्वहति दुःसहवाडवाग्निमंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयंति ॥ ४ ॥

तिलक—छन्द वसंत तिलका है याके तुकमें गुरु चाहिये लघु है गुरु गनिबो ॥

लघुको गुरु, यथा-देवको कवित्त ।

पीछे पंखा चौंर वारी ज्योंकी त्यों सुगंधवारी, ठाढ़ी बायें घायें घन फूलनिके हार गहे । दाहिने अतर और अँमरत मौरे लीन्हे, सामुहे लपेटे लाज भोजनके थार गहे ॥ नितके नियम हितूहितके बिसारे देव, चितके बिसारे बिसराये सब बारि पहे । शंपा घन बीच ऐसी चम्पा बन बीच फूली, डारिसी कुँआरि कुंभिलाति फूली डार गहे ॥ ५ ॥

तिलक--छन्दरूपघनाक्षरी है याके तुकंतमें लघु चाहिये गुरु है । सो लघुही गानिबो ॥

लघुनाम-दोहा ।

शंख मेरु काहल कुसुम, करतल दण्ड अशेष ॥
शब्द गंध बरसरपरस, नाम ल लहु की रेख ॥ ६ ॥

गुरुनाम ।

किंकिनि नूपुर हार फनि, कनक चौंर ताटंक ॥
कोउरो कुण्डल वलय, गो मानस गुरु बंक ॥ ७ ॥

दुकलनाम ।

णगन दुकल है भेदसो, प्रथम नाम गुरु जानि ॥
निजप्रिय सुप्रिय परमप्रिय, पिय बियलघुहि बखानि ८॥

। ऽ ० आदिलघु त्रिकलनाम ।

तोमर तुंमर पत्त सर, धुन चिरु चिह्न चिराल ॥
पवन बलट पट आदिलघु, त्रिकल नूतकी माल ॥ ९॥

ऽ – ० आदिगुरु त्रिकलनाम ।

तूर समुद निर्वान कर, तालो सुरपति नन्द ॥
नाम आदिगुरु त्रिकल को, पटह ताल अत चंद॥ १०॥

त्रिकलनाम ।

नारी रसकुल भामिनी, तंडव भास प्रमान ॥
नाम त्रिलघुकोजानि पुनि, त्रिकलहि ढगन बखान॥ ११॥

ऽऽ० दुइगुरुनाम ।

सुनति रसिक रस नाग पुनि, कहि मनहरण समान ॥
कुंती पूतासुर बलय, करन दोइगुरु जान ॥ १२ ॥

॥ऽ० अन्तगुरु चौकलनाम ।

कमलातन कर बाहु भुज, भुजअभरण अभिराम ॥
गजअभरण प्रहरण असनि, चकल अंतगुरुनाम॥ १३॥

।ऽ।० मध्यगुरु चौकलनाम ।

भूपति गजपति अश्वपति, नायक पौन मुरारि ॥
चक्रवती सुपयोधरो, मध्यगुरू कल चारि ॥ १४ ॥

ऽ॥० आदिगुरु चौकलनाम ।

गंड दहन बलभद्रपद, नूपुर जंघा पाइ ॥
तात पितामह आदि गुरु, चौकल नाम सुभाइ ॥ १५॥

॥॥० सर्वलघु-चौकलनाम ।

बिप्र पंचसर परमपद, शिखर चारिलघु जाति ॥
डगल चक्कल कहि चौकलहि, गजरथ तुरँगपदाति ॥ १६ ॥

।ऽऽ०आदिलघु पञ्चकलनाम ।

सुरनरिंद उडुपति अहित, दंती दंत तलंप ॥
मेघ गगन गज आदिलघु, पंचकलहि कहि झंप ॥ १७ ॥

ऽ।ऽ०मध्यलघु पंचकलनाम ।

पक्षि बिडाल मृगेन्द्र अहि, अमृत जोध लकलक्ष ॥
बीन गरुड कहि मध्यलघु, पंचकलहि परतक्ष ॥ १८ ॥

पञ्चकलके क्रमते नाम ।

इन्द्रासन बीरो धनुष, हीरो शेखर फूल ॥
अहि पाइक गनि क्रमहिंते, नाम पंचकल तूल ॥ १९ ॥
ठगन पकल पँचकलहि कहि, टगन षट्कलहि लेखि ॥
ताहि छकलके क्रमहिंते, भेद तेरहों देखि ॥ २० ॥

षट्कलकेक्रमते नाम ।

हर शशि सूरज शक्र अरु, शेषो अहि कमलाषि ॥
ब्रह्म किंकिणी बंधु ध्रुव, धर्म्मशालि चर भाषि ॥ २१ ॥

अथ वर्णगण ।

म न य भ गण शुभ चारिहैं, र स ज त अशुनो चारि ॥
मनुज कवितके प्रथम तुक, कीजै इन्हैं विचारि ॥ २२ ॥
म तिगुरु न तिलघु भादि गुरु, यादिलघू शुभ दानि ॥
महि अहि शशि जल क्रमहिंते, इष्टदेवता जानि ॥ २३ ॥
ज गुरुमध्य रो मध्यलघु, स गुरुअंत त लअंत ॥
इते अशुभ गण रवि अगिनि, पवन ख देव कहंत ॥ २४ ॥

द्विगुणविचार ।

मन हित यभ जन जतहि उद, रस रिपु उर अवरेखि॥
कबित आदि कुगणहिं परे, द्विगुण विचारहि देखि॥ २५॥
जन हित अति नीके त कछु, रिपु उदास मिलि मन्द॥
रिपु उदासही जो परै, तौ सब भांति कुबन्द ॥ २६॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे गुरुलघुगणागणवर्णनं नाम द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

अथ मात्राप्रस्तारवर्णनम् ।

सप्तकलप्रस्तार-सवैया ।

द्वै द्वै कलानिको बंध बने पहिले उबरे लघु आदि करो जू । भेद बढैबेको शीशके आदि गुरूके तरे लघु एक धरो जू ॥ और यथाप्रति पंक्ति खचै बचे पीछे गुरू लघु लेखि भरो जू । याही विधानते सर्व लघू लगि पूरण मत्तपथारथ रोजू ॥ १ ॥

प्राकृते-यथा ।

पटमगुरु हेट्ठट्ठाणे लहु आप रिठवेहु ॥ अपबुद्धि ये सरिसा सरिसापंती उघरिया गुरू लघु देहु ॥ २ ॥

दोहा ।

भयो जानि प्रस्तारकों, क्रमसों दीजै अंक ॥
संख्या नष्ट उदिष्टकी, कीजै उदर निशंक ॥ ३ ॥
इतने कलके भेद हैं, कितनों पूंछै कोइ ॥
पूर्व युगल सारि अंक दै जानै संख्या होइ ॥ ४ ॥

पूर्वयुगुलअंक-दंडक ।

जैकलको भेद कोऊ पूछे तेती कला कीजै ताके पर अंक दीजै क्रमहींते एक दोइ । एक दोय जोरि तीनि लिखि लीजै तीजे पर तीनि दोइजोरिआगेखैंचिलिखि जिय जोइ ॥ दस पांच पीछे तीनि जोरि आगे आठ लिखि याही विधि लिखे जैये कहाँलों बतावै कोइ । जितनी कलाके पर जेतो अंक परै यह जानि लीजै तेते पर प्रस्तारको अंत होइ ॥ ५ ॥

सप्तकलरूपे-यथा ।

१ २ ३ ५ ८ १३ २१
| | | | | | |

अथ नष्टलक्षण-दोहा ।

इते अंकपर होत है, भेद कहो केहि रूप ।
उतर हेत यहि प्रश्नके, नष्ट रच्यो अहिभूप ॥ ६ ॥

अथ मात्रानष्टकी अनुक्रमणी दंडक ।

जै कलमें भेद पूंछे तेतनीये कला कीजै तापै लिखि पूरब युगल अंक लीजिये । पूछयो अंक अन्तमें घटाइ बाकी हाथ राखि तामें लिखे अंकनि घटैवे रस भीजिये ॥ जौन यामें घटै करो ताके तर आगिली कला लै गुरु दास बचै योंही फेरि कीजिये । रीते परयो बीते नष्ट कर्म बाकी लघुही है पूंछयो जिन तिनको देखाइ रूप दीजिये ॥ ७ ॥

तिलक--काहू पूंछयो सप्तकलमें दशयों रूप कैसो ताके

प्रश्नको अंक दश सो इकीससे घट्यो बाकी रहे ग्यारह तामें तरह नहीं घटे तौ आठ घट्यो सो तेरहकी तरकी कला लेके गुरु भयो बाकी रहे तीनि तामें तीनिहीं घट्यो सो पांचके तरकी कलाको लेके गुरु भयो और रस दुहूं ओर लघुही रह्यो ॥

अथ मात्राउद्दिष्टलक्षण--कुंडलिया ॥

।ऽऽऽ	१
।।।ऽऽ	२
ऽऽ।ऽ	३
।ऽ।।ऽ	४
।ऽ।।ऽ	५
ऽ।।।ऽ	६
।।।।।ऽ	७
ऽऽऽ।	८
।।ऽऽ।	९
।ऽ।ऽ।	१०
ऽ।।ऽ।	११
।।।।ऽ।	१२
।ऽऽ।।	१३
ऽ।ऽ।।	१४
।।।ऽ।।	१५
ऽऽ।।।	१६
।।ऽ।।।	१७
।ऽ।।।।	१८
ऽ।।।।।	१९
।।।।।।।	२०

कहिये केते अंकपर, दासरूप यहि साज । करि उदिष्ट ताको उतर, देन कह्यो अहिराज ॥ देन कह्यो अहिराजपूर्वजु अलंक कलनि पर । लघुके शीशहि शीश गुरूके ऊपरहू तर ॥ पुनि गुरु शिरको अंक जोरिकै ठीकहि गहिये । अंत अंक सुघटाइ बचै बाकी सो कहिये ॥ ८ ॥

१ २ ३ ८ २१
। । ऽ ऽ ।
५ १३

तिलक-सत कलमें यह रूप लिखि पूंछचो जो कौनसो है । ताके पर अंक दियो है गुरुके शिर तीनिऔ आठ परचो सो ग्यारह इकीसमें घट्यो बाकी दशयों भेद है ।

अथ मात्रामेरुलक्षण ।

कितेएक गुरुयुक्त हैं, किते हैं तिगुरू युक्त । ताको उत्तर मेरु करि, देहु अहीपति उक्त ९

अनुक्रमणी--चौपाई ।

दै कोठा दोहरो लिखि लीजै । तातर दोहरो तीनठे-

बीजै ॥ ता तर दोहरो चारि बनायो । औ जित चाहो तितो बढ़ायो ॥ १० ॥ कोठनि आदि विषम जो पैये । एकै एक आँक लिखि जैये ॥ सम कोठनिकी आदि जो परो । द्वौ तिचारि यहि क्रमते भरो ॥ ११ ॥ पंक्ति अन्त इक इक लिखि आवो । तब रीतन भरिबो चित लावो ॥ शिर अंके तसु शिर पर अंके । जोरि भरहु क्रमते निरशंके ॥ १२ ॥ पहिलो कोठ दुकलकी जानै । द्वितिय त्रिकलकी बात बखानै ॥ यहि बिधि करे भेद सब जाहिर । चहहु तो जाहु अंक दै बाहिर ॥ १३ ॥

षष्टमात्रामेरु.

१	१
२	१

१	३	१
३	४	१

१	६	५	१
४	१०	६	१

छठयें चारि कोष्ट जो परै । सप्त कलहि उलटै उद्धरै ॥ सब लघु एक एक गुरु छहै । दश दुग चारि त्रि गुरुयुत रहै ॥ १४ ॥ सब लघु अंत अंक अहि उक्त । चलि गति बाम कहो गुरुयुक्त ॥ इहि बिधि करी जितेको चहो । सकल जोरि संख्याहू गहो ॥ १५ ॥

पताका—दोहा ।

कहो जिते गुरुयुक्त तुम, ते हैं किहि किहि ठौर ।
उतर हेत इह प्रश्नके, रचे पताका डौर ॥ १६ ॥

पताकाकी—अनुक्रमणी ।

जै कलकी पताक जिय लायो । खण्डमेरु ताको

अलगायो ॥ ताही संख्या कोठा करिये नाम पताका-पाँती खरिये ॥ १७ ॥

अरिल्ल ।

पुरुव जुअल सारि अंक भिन्न लिखि देखिये । अन्त अङ्क इत अन्त कोठ तेहि रेखिये ॥ तामहिं क्रमते इक इत अङ्क घटाइये । वा ढिग अधते दुतिय प्रति लिखि जाइये ॥ १८ ॥ तृतिय पंक्तिमें द्वै द्वै जोरि कमीक-रो । चौथे पंक्तिमें तीनि तीनि चितमें धरो ॥ इन भाँतिन प्रति पंक्ति एक बढ़ि अंकजू । घटै पताका रूप लिखो निरशंकजू ॥ १९ ॥

दोहा ।

गणना होइ नहीं न क्रम, आयो अङ्क न आउ ।
कारि पताक प्रस्तारमें, सब गुरुयुक्त देखाउ ॥ २० ॥

।।।ऽऽ	३
।।ऽ।ऽ	५
।ऽ।।ऽ	६
ऽ।।।ऽ	७
।।ऽऽ।	१०
।ऽ।ऽ।	११
ऽ।।ऽ।	१२
।ऽऽ।।	१४
ऽ।ऽ।।	१५
ऽऽ।।।	१७

४		१०		६	१
०	१	३	८	२१	०
	२	५	१३	१	
	४	६	१६	२	
	९	७	१८	३	
		१०	१९	५	
		११	२०	८	
		१२		१३	
		१४		२१	
		१५			
		१६			

द्वै कि तीनि गुरुयुतनि जो, लिखो चहौ इक ठौर ।
सिखि पताक प्रस्तार बिधि, जाना औरो और ॥ २१ ॥

कुण्डलिया ।

सब लघु सब गुरु लिखि ठयो प्रथम भेद इहि भांति ।
पहिले गुरुतर लघु करहि पुनि कारि सरिसै पांति ॥
पुनि कारि सरिसै पांति उलटि लघुतर गुरु लिखिकै ।
तजि आयो गुरु आदि दास इहि रीतिहि सिखिकै ॥
इक इक गुरु इहि भांति आदि दिशि ल्यावहि तब लहु ।
जबलगि सब गुरु आदि परै आगे कारि सब लहु ॥ २२ ॥

तिलक–सत कलमें द्वै गुरु युक्तको प्रस्तार जाकी संख्या पताकाके दश कोठेमें है ।

दोहा ।

पताकाहिको देखिकै, यामें दीजै अंक ।
उद्दिष्टो प्रस्तारमें, कीजै सही निशंक ॥ २३ ॥

इति पताकाप्रस्तार ।

अथ मर्कटीलक्षण--गीतिका ।

यह पंक्ति कोठनि खैंचिकै प्रतिपंक्तिको चितु दीजिये । तहँ वृत्तिभेद रु मात्रवर्णसो लघु गुरू लिखि लीजिये ॥ तिन आदि कोठनि एक एकनि ठानि गुरु ढिग सून है । पुनि वृत्ति कोठ दुआदि गनती भरी घटियन ऊन है ॥ २४ ॥
लखि भेद पंक्ति विचारि भरिये पूर्व जुअलै अंकही ।
कारि वृत्ति भेदहि गुनन पुरवहु मात्र पंक्ति निशंकही ॥

लघु पंक्ति एकजु अंकसो गुरुपंक्तिमें लिखि लेहु जू ।
तेहि मात्र पंक्ति घटाइ वाकी बरणमें धारि देहु जू ॥२५॥
सोइ वर्ण पंक्तिहुमें घटै लघुपंक्तिमें लिखि, आनिये । तेहि आनिकै गुरुपंक्तिमें घटना बढ़ै फिरिठानिये॥ प्रस्तारप्रति जो भेद मात्रा लघु गुरूकी ठीक है । तेहि वृत्ति कोठनि संग मर्कटजाल कहत अलीक है ॥ २६ ॥

वृत्ति	१	२	३	४	५	६
भेद	१	२	३	५	८	१३
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८
लघु	१	२	५	१०	२०	३८
गुरु	०	१	२	५	१०	२०

मर्कटीज्ञान-दोहा ।

किते भेद लघु अंत हैं, किते भेद गुरु अन्त ॥
इहि पूछे प्रस्तारमें, सूची बरणैं सन्त ॥ २७ ॥
जिते अंकपर अन्त है, ता पाछै लघु अन्त ।
ता पाछेको अन्त लहि, गुरु अन्तहि कहि तन्त॥२८॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राप्रस्तारे नष्टोद्दिष्टमेरुमर्कटी-पताकासूचीवर्णनं नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

दोहा ।

जितने मात्राभेदमें, प्रस्तारहि परकार ॥
तितनो बर्णहुमें कियो, अहिनायक विस्तार ॥ १ ॥

अथ वर्णप्रस्तारकी अनुक्रमणी-विजया ।

आदिको भेद सबै गुरुके पुनि भेद बढैबेकि रीति रचै । आदि गुरूके तरे लिखिकै लघु आगे यथाप्रति

पंक्ति खचै ॥ पाछे गुरूहिसो पूरण वर्णक सर्व लघू लगि योंहीं मचै। ऐसे पथा रुकै दोइसो दूनोई दूनोके वर्णकी संख्या सचै ॥ २ ॥

अथ वर्णसंख्या यथा-- २ ४ ८ १६ ३२ / ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ इति-पंचवर्णसंख्या

अथ नष्टलक्षण-दोहा।

पूछे अंकहि अर्ध कारि, सम आये लघु जानि ॥
विसमें इक दै अर्ध कारि, गुरु लिखि पूरण ठानि ॥ ३ ॥

तिलक--पन्द्रहों भेद पूछ्यो सो पन्द्रह आधो नहीं ह्वै सक्तो एक मिलायो सोरहको आधो कियो एक गुरु लिख्यो बाकी रहे आठ ताको आधो चारि पूरे पर्‌यो लघु लिख्यो दोइको आधो एक पूरे पर्‌यो लघु लिख्यो एक मिलाइ आधो कियो गुरु लिख्यो ॥ऽ॥।ऽ॥सब मिलाइ।

अथ वर्णउद्दिष्टलक्षण-दोहा।

लिखि पूछे पर एक बे, दून दून लिखि लेहि ॥
लघु शिर अंकनि जोरिके, एक मिलैकहि देहि४॥ २ ४ ८ १६ / ऽ । । ऽ

अथ वर्णमेरुलक्षण--कुण्डलिया।

शिरपर कोठे दोइ तल, तीनि तासु तल चारि।
अक्षर मेरु बढाइ यों, जत प्रस्तार निहारि ॥ जत प्रस्तार निहारि पांतिकी आदिहु अन्त हु। एक एक लिखि जाहु कह्यो पन्नग भगवन्तहु ॥ गनि दै है गुरु युक्त सकल जिय करहु नखरको। सूने कोठनि भरहु जोरि द्वै द्वै शिर परको ॥ ५ ॥

अथ वर्णपताकालक्षण--दोहा ।

कोष्ठ पताकाको करहि, खण्ड मेरुकी राखि ॥
ताके शिर धर एकते, दूनो दूनो राखि ॥ ६ ॥

१	१	१					
१	२	१	२				
१	३	३	१	३			
१	४	६	४	१	४		
१	५	१०	१०	५	१	५	
१	६	१५	२०	१५	६	१	६

दण्डक ।

दूनो अंक राखि खरी पांतिन लिखन लागे एक द्वै लै तीनि तीनि द्वै लैपांच रेखिये। याही क्रम उपजति अंक- निसों आगे आगे जोरि जोरि खरी पांति लिखित विशे- षिये ॥ एक पांति भरि दूजी पांति वहै रीति करि आयो अंक छोंडि ताके आगे ढूंढि लेखिये । क्रम टूटे एकै भलो चलतहि आगे ढूँढि दास ऐसे वरणपताका पूरे पेखिये ७ ॥

दोहा ।

वरणमत्तको एकही, है पताकप्रस्तार ।
वाही रूपनि पर धरो, याको नाम उदार ॥ ८ ॥

अथ वर्णमर्कटीलक्षण-दण्डक ।

षट्पांति लिखि पहली ये गनतीये भरो दूजी पाँति द्वैते दूनो दूनो अंक धरि देहु । दुहुनसों गुनि गुनि चौथी

पंचवर्णपताका ।

१	५	१०	१०	५	१
१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	१६		
		२१	२७		
		२५	२९		

।।।ऽऽ	८
।।ऽ।ऽ	१२
।ऽ।।ऽ	१४
ऽ।।।ऽ	१५
।।ऽऽ।	२०
।ऽ।ऽ।	२२
ऽ।।ऽ।	२३
।ऽऽ।।	२६
ऽ।ऽ।।	२७
ऽऽ।।।	२९

पंचकलमें द्वैगुरुयुक्तको प्रस्तार ।

पांति भरि ताको आधो आधो पांची छठी पाँतिनको भरि देहु ॥ चौथी पांची पांतिनके अंकनको जोरि जोरि तीजी पांति रीती होय पूरण वहै कारि देहु । वृत्ति भेद मात्रा वरण लघु गुरु पूछै दास ताके आगे वरणमरकटीये धरि देहु ॥ ९ ॥

वृत्ति	१	२	३	४	५	६
भेद	१	२	३	५	८	१३
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८
लघु	१	२	५	१०	२०	३८
गुरु	०	१	२	५	१०	२०

दोहा ।

जिते भेदपर अन्त है, ता आधो गुरुअन्त ।
तितनोई लघु अन्त है, अक्षर सूचीसन्त ॥ १० ॥

नष्ट उदिष्ट पताक है, मत्ताहूकी भांति ॥
समुझि लीजिये सुमति सजि, अक्षरसंख्यापांति ॥ ११ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे, नष्टोदिष्टमेरुमर्कटीपताका-
सूचीवर्णनं नाम चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

दोहा।

चारि चरण चहुंके वरण, मत्त होहिं यक रूप ॥
वृत्त छन्द तेहि लगि रच्यो, प्रस्तारनि अहिभूप ॥ १ ॥
यदपि वर्णप्रस्तारमें, सकल वृत्तिको बोध ॥
तदपि मत्तप्रस्तारहू, सकल मिलै अविरोध ॥ २ ॥

छप्पै।

मत्त छन्दकी रीति दास बहु भांति प्रकाशै।
आदि अन्त कल दुकल बढ़ै दूजो नहिं भासै ॥
चारचों तुक सम कलनि परहि यह नेम निबाहिय।
कहुं गुरु थल है लघू दियहु नहिं भ्रमगति चाहिय ॥
बिन गने होत पूरण कला, जति गति कवि वाणीहिवस।
यह जानि नागनायक कह्यो, जिह्वा जानै छन्दरस ॥ ३ ॥

दोहा।

दुकल तिकल चौकल पकल, छकल निरखि प्रस्तार ॥
कमते वरणत दास तहँ, वृत्ति छन्दविस्तार ॥ ४ ॥
मत्तछन्दमें वृत्तिहू, दरशावत इहि हेत ॥
बहु छन्दनकी गति मिले, एक सुकवि गनि लेत ॥ ५ ॥

नेम गह्यो यह दास कारि, हरि हर गुरुहि प्रणाम ॥
उदाहरणके अन्तमें, परै छन्दको नाम ॥ ६ ॥
द्वै कलके द्वै भेदमें, जानो 'श्री''मधु'छन्द ।
'मही''सार' अरु 'कमल' ये,तीनि त्रिकलके बन्द॥७॥

द्वै मात्राके-छन्द ।

श्री छन्द ।

जै । है ॥ श्री । की ॥ ८ ॥

मधु छन्द ।

तिय । जिय ॥ बधु । मधु ॥ ९ ॥

तीनमात्राके-छंद ।

मही छन्द ।

रसा । समा ॥ नहीं । महीं ॥ १० ॥

सार छंद ।

ऐनि । नैनि ॥ चारु । सारु ॥ ११ ॥

कमल छंद ।

चरण । वरण ॥ अमल । कमल ॥ १२ ॥

चारि मात्राके छंद--दोहा ।

चारि मत्त प्रस्तारमें, पांच वृत्ति निरधारि ।
'कामा''रमनि''नारिन्द'अरु,'मन्दर''हरि'हिविचारि१३

कामा छंद ।

रामै । नामै ॥ यामै । कामै ॥ १४ ॥

रमनी छंद ।

धरणी । बरणी ॥ रमणी । रमनी ॥ १५ ॥

नरिंद छंद ।

सम्हारु । सवारु ॥ परिन्द । नरिन्द १६ ॥

मंदर छंद ।

ध्यावत । ल्यावत ॥ चन्दर । मन्दर ॥ १७ ॥

हरि छन्द ।

जगमाहिं । सुख नाहिं ॥ भ्रम तजि । हरि भजि ॥१८॥

पंचमात्राप्रस्तारके छंद-सोरठा ।

पंचमत्तप्रस्तार, आठभेदयुत हरि-प्रिया ।
'तरणिजा'रु'पंचार''वीर''बुद्धि'निशि'यमक''शशि'१९

प्रिया छन्द ।

है खरी । पत्थरी ॥ तोहिं या । री प्रिया ॥ २० ॥

तरणिजा छंद ।

उर धरो । पुरुष सो ॥ बरणिजा । तरणिजा ॥ २१ ॥

पंचाल छंद ।

नाचत । गावत ॥ दै ताल । पंचाल ॥ २२ ॥

वीर छंद ।

हरु पीर । अरु भीर ॥ वर धीर । रघुवीर ॥ २३ ॥

बुद्धि छंद ।

भ्रमै तजि । हरै भजि ॥ करै शुद्धि । धरै बुद्धि ॥२४॥

निशि छंद ।

सुक्ख लहि । दुक्ख दहि॥भानि रिसि ।याहिनिशि २५

यमक छंद ।

श्रुति कहहि । हरिजनहि॥छुवत नहिं।यम कबहिं॥२६॥

शशीछंद ।

महीमें । सहीमें ॥ यशीसे । शशीसे ॥ २७ ॥

छः मात्राके छंद-दोहा ।

'ताली' 'रमा' 'नगन्निका' जानि 'कला' 'करता' हि ।
'मुद्रा' 'धारी' 'वाक्य' अरु, 'कृष्ण' 'नायको' चाहि २८
'हर' अरु 'विष्णु' 'मदन' गनो, अधिको होत न मित्त ।
षटकल तेरह भेदके, प्रगट तेरहों वृत्त ॥ २९ ॥

ताली छन्द ।

नाचै है । शंभूपै ॥ वेताली । दै ताली ॥ ३० ॥

रमा छन्द ।

जगमाहीं । सुख नाहीं ॥ तजि कामै । भजि रामै ॥ ३१ ॥

नगन्निका छन्द ।

प्रसिद्ध हों । अधन्निका ॥ नसिद्ध हों । नगन्निका ३२ ॥

कला छन्द ।

धीर गहो । आजु लहो ॥ नंदलला । कामकला ॥ ३३ ॥

करता छन्द ।

महि धरता । जग भरता ॥ दुख हरता । सुख करता ॥ ३४ ॥

मुद्रा छन्द ।

भजे राम । सरै काम ॥ न छापाहि न मुद्राहि ॥ ३५ ॥

धारी छन्द ।

दानवारि । चित्त धारि ॥ पाप झारि । कोश धारि ॥ ३६ ॥

वाक्य छन्द ।

जगतनाथ । गहत हाथ ॥ शरण वाक्य । कहत वाक्य ॥ ३७ ॥

कृष्ण छन्द ।

छांड़ै हठ । एरे शठ ॥ तृष्णै तजि । कृष्णै भजि ॥ ३८ ॥

नायक छन्द ।

सुखकारन।दुखटारन ॥ सब लायक।रघुनायक ॥ ३९ ॥

हर छन्द ।

जगतजननि।दुखी जननि ॥ कृपा करहि।यथा हरहि ४०

विष्णु छन्द ।

दास जगत।झूठ लगत ॥ याहि तजहि।विष्णु भजहि ४१

मदनक छन्द ।

तरुणिचरण।अरुणवरण ॥ हृदयहरण।मदनकरण ४२॥

सात मात्राके छन्द-दोहा ।

सात मत्तप्रस्तारको, 'शुभगति' जानो छन्द ।
वृति यकीस प्रस्तार हैं, चारि भांति गति बन्द ॥४३॥

शुभगति छन्द ।

कृपासिन्धो।दीनबन्धो॥सर्व सुरपति।देहि शुभ गति ४४

पुनः ।

लालगुपाल।प्रभाविशाल।यशुमतिनन्द।आनँदकन्द ४५

पुनः ।

खलै घायक।सर्व लायक॥कंसमारण।जनउधारण॥४६॥

पुनः ।

दुखको हरो।सुख विस्तरो॥बाधाकदन।करुणासदन ४७

आठ मात्राके छन्द--दोहा ।

आठ मत्तप्रस्तारके, 'तिर्नां'-दिक उनमानि ।
सहित'हंस''मधुभार'गति, चौंतिस वृत्ति बखानि॥४८॥

लक्षण प्रतिदल ।

कर्नों कर्नों।'तिर्नों'बर्नों॥भागनु करना।'हंस' बरन्ना॥नव

हि प्रशंसा।कहि 'चौबंसा'। द्विजवर भासन। कहत 'सवासन'॥ नगन नगवती। कहिय 'मधुमती' ॥४९॥

तीर्ना छन्द ।

धर्मज्ञाता।निर्भैदाता ॥ तृष्णा हिन्नो।जीवै तिन्नो ॥५०॥

हंस छन्द ।

पोखर जोऊ।दीह कि तोऊ ॥ जात न केहू।हंस लटेहू५१

चौबंसा छन्द ।

उपजे पुत्ता। सुलगन जुत्ता ॥ जग अवतंसा। चरचेउ बंसा ॥ ५२ ॥

सवासन छन्द ।

सुनहु बलाहक। डुजियत नाहक ॥ वरषि हुताशन। अपजश वासन ॥ ५३ ॥

मधुमती छन्द ।

तप निकसत हो। धारि कब शिर हो ॥
विमल वनलती। सुरभि मधुमती ॥ ५४ ॥

लक्षण--दोहा ।

विप्र जगन 'करहंत' है, वाही गति 'मधुभार' ॥
'छबि' त्रिपंच जति जानिये, आठ मत्तप्रस्तार ॥ ५५ ॥

करहंत छन्द ।

यशुमतिकिशोर।शशि जिमि चकोर ॥
मम मुख लखन्त। यकटक रहन्त ॥ ५६ ॥

मधुभार छन्द ।

दक्षिणसमीर । अतिकृश शरीर ॥
हु अमंद भाइ । मधुभार पाइ ॥ ५७ ॥

छबि छन्द ।

मिलिहि किमि भोर । तकत शशिवोर ॥
थकित सो विशेषि । वदनछबि देखि ॥ ५८ ॥

नौमात्राके छन्द-दोहा ।

नौमत्ताकी अमित गति, पचपनवृत्त विचारि ।
कर्न यगन 'हारी' गनो, तस 'वसुमती' निहारि ॥५९॥

हारी छन्द ।

तो मानु भारी । ठाने पियारी ॥
सो तै सुखारी । होती महारी ॥ ६० ॥

वसुमती छन्द ।

सो शुभ्र शशिसो । जो दान असिसो ॥
साजै वसुमती । सारी वसुमती ॥ ६१ ॥

दशमात्राके छन्द-दोहा ।

दश मत्ताके छन्दमें, वृत्त नवासी होय ।
'संमोहादिक' गतिन सँग, वरणत हैं सब कोय ॥६२॥

सोरठा ।

'संमोहा' गुरु पांच, कहि 'कुमारललिता' जसग ।
या गन 'मध्या' बांच, 'तुंगा' दुज सँग भास गहु॥६३॥

संमोहा छन्द ।

ह्यो चाहो सन्ता । जो मेरो कन्ता ॥
तो भंजो कोहा।लोभा संमोहा ॥ ६४ ॥

कुमारललिता छन्द ।

जु राधहि मिलावै । वहै मुहि जियावै ॥
कहै भरि उसासों । कुमारललितासों ॥ ६५ ॥

मध्या छन्द ।

तौलौं विधि जामे । लज्जा अरु कामे ॥
बाटो यह सोई । मध्या कुच दोई ॥ ६६ ॥

तुंग छन्द ।

अम्बर छबि छाजे । मुक्त अवलि राजे ॥
मेरु शिखर नीके । तुंग उरज तीके ॥ ६७ ॥

तुंगा छन्द ।

तुव मुख शशि ऐसो । निरखत जेहि शेसो ॥
छकि रहु है गुंगा । सुनहि उरज तुंगा ॥ ६८ ॥

लक्षण–दोहा ।

द्विजवर जग 'कमल'हि रचो, द्वै द्विजगो 'कमला'हि॥
त्यों 'रतिपद' सँग नातहै, 'दीपक'–लाते चाहि ॥६९॥

कमल–यथा ।

पिय चष चकोर है । तियनयन भोर है ॥
विधुवदन बालको । कमलमुख लालको ॥ ७० ॥

कमला छन्द ।

कब अँखियन लखि हों । अरु भुजभरि रखिहों ॥
शशधर विमल कला, हृदयकमल कमला ॥ ७१ ॥

रतिपद-यथा ।

युवति वह बरति तो । उरते यह टरति जो ॥
हरनि हिय दरदकी । सुरति पद पदुमकी ॥ ७२ ॥

दीपक छन्द ।

जयजयति जगबन्द । मुनिकौमुदीचन्द ॥
त्रैलोक्य अवनीप । दशरत्थ कुलदीप ॥ ७३ ॥

ग्यारह कलाके छन्द-दोहा ।

ग्यारह कलमें एक से, चौवालिस गनि वृत्त ।
तहँ 'अहीर' 'लीला' अपर, 'हंसमाल' गनि मित्त ॥७४॥

सोरठा ।

जात 'अहीर' कहंत, रात प्रगटि 'लीला' भनो ।
स ग यो ग्यारह मंत, छंद 'हंसमाला' गनो ॥ ७५ ॥

अहीर छन्द ।

कौतुक सुनहु नवीर । न्हान धसी तिय नीर ॥
चीर धरयो लखि तीर । लै भजि गयो अहीर ॥ ७६ ॥

लीला छन्द ।

धन्य यशोदा कही । नन्द बडे भागही ॥
ईश्वर है जा घरै । अद्भुत लीला करै ॥ ७७ ॥

हंसमाला छंद ।

इहि अरण्यमाहीं । सर मानुष्य नाहीं ॥
विकसे कंज आला । कुरैं हंसमाला ॥ ७८ ॥

बारह मात्राके छंद-दोहा ।

बारह मत्ता छन्दगति, वरन्यो अमित फणीश ।
होत किये प्रस्तार हैं, वृत्त दुसै तैंतीस ॥ ७९ ॥

लक्षणप्रतिदल ।

तीनो कर्न 'शेषा'। मो सो गो 'मदलेषा' ॥
'चित्रपदा' भभकर्नो । ननमहि 'युक्ता' बर्नो ॥ ८० ॥
रोनसोहि 'हरमुख' ज्यों ।'अमृतगति' द्विज भसत्यों ॥
नयसहि 'सारंगिय' हो । दश लहु गुरु 'दमनक' हो ॥८१॥

शेष छंद ।

ताको जीमें ध्याऊं । ताहीको हौं गाऊं ॥
पीरो जाके केशा । कंठे जाके शेषा ॥ ८२ ॥

मदलेखा छंद ।

मिथ्या वादन कोहा । निर्लज्जा अरु मोहा ॥
जेतो ऐगुण देखो । तेतोमें मद लेखो ॥ ८३ ॥

चित्रपदा छंद ।

राम कह्यो निज धोखे । स्वर्ग लह्यो तिन चोखे ॥
भक्तन कोन विचारो । चित्रपदारथ चारो ॥ ८४ ॥

युक्ता छंद ।

दृगयुग मनको मोहै । तिनसँग पुतरी सोहै ॥
लखि यह उपमा युक्ता । कमल भ्रमरसंयुक्ता ॥ ८५ ॥

हरमुख छंद ।

धन्य जन्म निज कहती । प्राण वारतहि रहती ॥
देखि ग्वारि लहि सुखको । मैन गर्व हरमुखको ॥ ८६ ॥

अमृतगति छंद ।

फिरि फिरि लावत छतिया । लखत रहै दिन रतिया ॥
तुम जु लिखी वहि पतिया । अमृतगती मृदु बतिया ८७॥

सारंगिय छंद ।

धनि धनि ताही तियको । वश करती जो पियको ॥
सुरनि रमावै हियको । कर गहि सारंगियको ॥ ८८ ॥

दमनक छंद ।

विषधर धर परम प्रिया । जगतजननि सदय हिया ॥
जय जय जनदरदहरी । प्रबल दनुजदमनकरी ॥ ८९ ॥

दोहा ।

गोसभ गो 'नरक्रीड' है, 'बिंब'नसों यों पूर ।
सजसी 'तोमर' जानियो, त्यों तमोल है 'सूर' ॥ ९० ॥

मानवक्रीडा-यथा ।

धन्य यशोदाहि कही । नन्द बडो भाग सही ॥
ईश्वर ह्वै जाहि घरै । मानवको क्रीड करै ॥ ९१ ॥

बिम्ब छंद ।

अमियमें आशा तेरो । हरत वह चेतु मेरो ॥
मनहिं यह क्यों न मोहै । अधर तुव बिम्ब सोहै ॥ ९२ ॥

तोमर छंद ।

असतीनको शिष मानि । तिय क्यों तजै कुलकानि ॥
द्विज यामिनी अपवाद । कहुँ छोड़तो मर्य्याद ॥ ९३ ॥

सूर छंद ।

बीधै न बाला नैन । श्री पाइजे मोहै न ॥
रागी नहीं है सूर । ते तो बडे हैं सूर ॥ ९४ ॥

दोहा ।

'लीला' रवि कल जातयुत, सज करनो 'दिगईश' ।
'तरलनयन' रवि लघु कला, प्रस्तारचो फणिईश ॥ ९५ ॥

लीला छंद ।

अवधपुरी भाग भारु । दशरथगृह छबि अगारु ॥
राजत जहँ बे स्वरूप । लीला तनु धारि अनूप ॥९६॥

दिगीश छंद ।

वर मैं गोपाल मागौं । पदपद्म प्रेम पागौं ॥
हर ध्याइ जो आनंदै । दिगईश जाहि बन्दै ॥ ९७ ॥

तरलनयन छंद ।

कमलवदनि कनक बरनि । दुरदगमनि हृदयहरनि ॥
बड़ेहि सुकृति मधुरबयनि । मिलति तरुणि तरलनयनि ॥

तेरहकलके छंद-दोहा ।

'नराचिका'—दिक तेरहै, कलकी गति गनि लेहु ।
वृत्ति बूझिकै तीनिसै, सतहत्तर कहि देहु ॥ ९८ ॥
कर्ना जोर 'नराचिका', जो गोयमन 'महर्ष' ।
रगन रगन अरु नन्दते, है 'लक्ष्मी' उत्कर्ष ॥ ९९ ॥

नराचिका छंद ।

भौंहैं करी कमान हैं । नैना प्रचण्ड बान हैं ॥
रेखा शिरे जो तैं दई । नराचिका यहौ भई ॥ १०० ॥

महर्ष छंद ।

तमोर गुनी जत भाई । जवाहिरकी गति पाई ॥
जितो पर भूमिहि जाई । तितो इमहर्ष बिकाई ॥१०१॥

लक्ष्मी छंद ।

वेद पावै न जा अंत । जाहि ध्यावैं सबै संत ॥
ज्योइबो जक्त जा तंत । पाहि सो लक्ष्मीकंत ॥१०२॥

चौदह मात्राके छन्द–दोहा ।

चौदह मत्ता छन्दगति, शिष्यादिक अवरेखि ॥
भेद छसै दश होत हैं, प्रस्तारो करि देखि ॥ १०३ ॥

लक्षणप्रातिपद ।

सातो गो 'शिष्या' कीजै । बिय दुज मगन 'सुवृती' है॥
'पाइत्ता' मो भहिसगनो । है 'मनिबंधो' भौमसको १०४॥
तीनि भग्गनग 'सारवती' । 'सुमुखि' दुजो भभ हारवती॥
नरजगे 'मनोरमा' कही। दुज सजग 'समुद्रिका' वही १०५

शिष्या छन्द ।

मीचौ बांधी जाके ही । नाहीं बाच्यो ताको जी ॥
एरे भाई मेटै को । लिख्या सिख्या बंध्ये जो॥ १०६ ॥

सुवृत्ती छन्द ।

असित कुटिल अलकै तेरी। उचित हरतु है मति मेरी॥
यह कत सुमु हनै जीको। बरजहिडरज सुवृतीको १०७

पाइत्ता छन्द ।

नैना लागे विधुवदनी । वैरी जुट्टे प्रबल अनी ॥
माँगो पासो आरिय अड़े। पाइत्ता है करम बड़े ॥१०८॥

मानिबंधो छन्द ।

आपुहि राख्यो जो न चहै। कर्म लिख्यो तौ पाइ रहै ॥
कर्महिं लागै हाथ सोऊ। जो मनि बाँध्यो गांठि कोऊ १०९

सारवती छन्द ।

आवती बाल शृंगारवती । पीन पयोधर भारवती ॥
कुंजर मोतिय हारवती । पुंज प्रभा दधि सारवती ११०

सुमुखी छन्द ।

यहन घटाचहुओर बनी ।दश दिश दौरति हार अनी॥
तजि यहिऔसररूपसखी।चलिहारिपै रजनीसुमुखी१११

मनोरमा छन्द ।

जबहिं बाल पालकी चढी । तबहिं अद्भुतै प्रभा बढी॥
लखी दास पूर्णोपमा । कमलमैं बसी मनोरमा॥११२॥

समुद्रिका छन्द ।

हरि मनु हरिगो कह्यौ यही ।
नहिं नहिं नजू नहीं नहीं ॥
सुनि सुनि बतिया मनो पिका ।
लखि लखि अंगुरी समुद्रिका ॥ ११३ ॥

लक्षण--दोहा ।

चारि दशै कल'हाकली' लमलम 'शुद्धग' तंत ।
सगन भुजा ह्वै 'संयुता' दुरवि 'स्वरूपी' मंत ॥११४॥

हाकलिका छन्द ।

परतिय गुरतिय तूल गनै । परधन गरलसमान भनै ॥
हियनितरघुबरनाम ररै । तासु कहा कलिकालकरै ११५

शुद्धगा छन्द ।

अरी कान्हा कहां जैहै । सुतेरो दास ह्वै रैहै ॥
सितारा लै बजावै बू । केदारा शुद्ध गावै तू ॥ ११६

संयुता छन्द ।

नहिं लालकी मृदु हास है । मनमत्थकी यह पास है ॥
भुँव नैन संग नलेखिये। धनु तीरसंयुत पेखिये॥११७॥

स्वरूपी छन्द ।

श्रीमन मोहनकी मूरति । है तुव स्नेहकी सूरति ॥
मैं निज मन यह अनुरूपी।तू मोहन प्रेमस्वरूपी११८॥

पंद्रहमात्राके छंद-दोहा ।

पन्द्रह मत्ता छन्द गति, आदि 'चौपई' जानि ।
नौसै सत्तासी कहत, वृत्तिभेद इनमानि ॥ ११९ ॥

लक्षण ।

पन्द्रह कला गनो 'चौपई' ।
'हंसी' तिन्ना दुज घन ठई ॥
तर हरिखान उपरलो कला ।
सकल कहत अहिपति 'उज्जला' ॥ १२० ॥

चौपाई ।

तुव प्रसाद देख्यो भरि नैन।कही सुनी मनभावति बैन॥
कब परि है मोहनगलबांह।चौपइठईतनी मनमांह॥१२१॥

हंसी छंद ।

आई वक्षो परि चिकनई । छूटै लागी तन लरिकई ॥
लागी हासी मनमृदु हरै।बाला हंसी गति पगु धरै १२२॥

उज्जला छंद ।

धवल रजत परबत हो तबै। अरु पयनिधिको बरणैं सबै ॥ तबहिं विमल ही शशिकी कला । जब न हुत्यो तो जस उज्जला ॥ १२३ ॥

लक्षण-दोहा ।

तीनि तगन यक है ध्वजा, 'हरिनी' छन्द सुभाउ ।
तीनि रगन अहिपति कहे,'महालक्ष्मी' ठाउ ॥१२४॥

हरिनी छन्द ।

बसै उर अंतरमें नितही । मिलै कबहूँ भरि अंक नही ॥
लखों सब ठौर न बैन कहै।यहै हरिनीसुरीति गहै १२५

महालक्ष्मी छन्द ।

शास्त्रज्ञाता बड़ो सो भनो । बुद्धिवंतो बड़ो सो गनो॥
सोइ शूरो सोइ सन्तहैं । जो महालक्ष्मीवंत है ॥१२६॥

सोरहमात्राके छन्द–दोहा ।

सोरह मात्रा छन्द गति, 'रूपचौपई' लेखि ।
पन्द्रहसै सत्तानवे, जानो भेद विशेखि ॥ १२७ ॥

रूपचौपाई छन्द ।

तुव प्रसाद देखो भरि नैनो । कही सुनी मनभावतिबैनो ॥
कबपरिहैमोहनगलबाँही।चौपइठईतनीमनमाही १२८॥

लक्षण ।

चारचो कर्नां 'विद्युन्माला'।मोती पोहै 'चंपकमाला'॥
कर्ना सदु हैं 'सुखमा'लसिता।तिन्ना ननगो 'भ्रमरविल-
सिता'॥तिन्ना नोयो सुसु किय 'मत्ता'।'कुसुमविचित्रा'
नयनय जत्ता ॥ गोसभसोगो हरि'अनुकूले'। दुज भभ
'तोमर'सो गगतूले॥ निजभइ 'नवमालिनि'निजुमंडी ।
नस्सासससगहिजियजानिय'चण्डी'॥'चक्र' भदुजदुजस-
गनहि थुलिका।ननगननगहै 'प्रहरनकलिका'॥ 'जलोद्ध-
तगती' जस जसपगनो । 'मनिगुन' दुज पिय दुज पिय
सगनो॥ऐन भाग गहि'स्वागत'कोछै।'चन्दवर्त्म'रन भास

अगट है ॥ निज जारि पावत 'मालती'सदा । नभजरीहि पठवै'प्रियंवदा'॥रेणु रेल गहिहै'रथोद्धतो'। नभसथाहि 'द्रुतपाउ'शुद्ध तो॥'पंकअवलि'भनि जो जलही सुनि । बट दश लघुहि 'अचलधृति'मनगुनि ॥ १२९ ॥

विद्युन्माला छन्द ।

दूजेकोप्यो वासों भारी । नीरे नाहीं शृंगी धारी ॥
एरी क्यों जीवैगी बाला । चौहाँ नच्चे विद्युन्माला १३०

चम्पकमाला छन्द ।

देख्यो वाको आननचन्दा।लूट्यो प्यारे आनँदकन्दा॥
आई जीकी मोहनि बाला।कीजै हीकी चम्पकमाला १३१

सुखमा यथा ।

होतो शसिसो मान्यो मनमें । जान्यो हरि हैं तापैं अनमें ॥ बीतीं सजनी बातें सुखकी। देखे सुखमा प्यारे सुखकी ॥ १३२ ॥

भ्रमरविलसिता छन्द ।

धीरे धीरे डगमग धरती । राती राती द्युति विस्तरती ॥ आवै आवै त्रिय मृदुहँसिता । आगे आगे भ्रमरविलसिता ॥ १३३ ॥

मत्ता छन्द ।

आयो आली विषम वसंता।कैसे जीवौ निअर न कंता॥
फूले टेसू करि बनरत्ता ।चौहाँ गूंजै मधुकर मत्ता १३४॥

कुसुमविचित्रा ।

चलन कह्यो पै मोहिं डर भारी । पर सुगंधा वह

सुकुमारी ॥ अलि तहँ ह्वै है अधिक बिहारी । कुसुम-विचित्रा वह फुलवारी ॥ १३५ ॥

अनुकूल छन्द ।

गोपिहु ढूँढो व्रत कत दूजा । कूबरहीकी करहु न पूजा ॥ योग सिखावै मधुकर भूलो । कूबरहीसों हरि अनुकूलो ॥ १३६ ॥

तोमर छन्द ।

तुअ दृगसों जननी दृग तेरो । नहिं सम ताहि लहै मनु मेरो ॥ जलचर खंज पराजय साजै । सखि नव तोमर सो लखि लाजै ॥ १३७ ॥

नवमालिनी छन्द ।

पहिरत पाद जासु शितलाई । सखि तन होति कम्प अधिकाई ॥ तिय पिय स्वांग चीन्हि वह राई । यह नव मालिनि सुमन ले आई ॥ १३८ ॥

चण्डी--यथा ।

जय जगजननि हिमालयकन्या । जैति जैति जय त्रिभुवनधन्या ॥ कलुष कुमति मद मत्सर खण्डी । जयति जयति जनतारणि चंडी ॥ १३९ ॥

चक्र-यथा ।

देव चतुर्भुज चरणन्ह परिये । याहि बनक मम हिय थिति करिये ॥ शंख रु गद बियकर निशि भरिकै । चक्र कमल त्रिय कर बिच धरिकै ॥ १४० ॥

प्रहरनकलिका छन्द ।

दशरथसुतको सुमिरन करिये । बहु तपजपमें भटकि न मरिये ॥ बिरद बिदित है जिन चरननको । प्रहरन-कलिकाटन दुखगनको ॥ १४१ ॥

जलोद्धतगति ।

घनो भगरु राक्षसै करतु है । न राम ढिगते सही परतु है ॥ अगारगन वै डरे तरनितैं । जलोद्धतगती उठै धरनितैं ॥ १४२ ॥

मनिगुन ।

अभिनव जलधर सम तन लसितं । अरुणकमल दल नैन हुलसितं ॥ जयति शरदशशिसम वर वदनं । दिन-मणिकुल दिनमणि गुणसदनं ॥ १४३ ॥

स्वागता ।

याहि भांति तुमहूं जु खिझावे । बाल बात तब क्यों बनि आवे ॥ नन्दलाल मटक्यो कब ऐसे । स्वागता सुक-रती तुम जैसे ॥ १४४ ॥

चन्द्रवर्त्म छन्द ।

ऊभि स्वांस लिय मैं दुख भारिकै । घेरि लीन्ह तहँ भौंरनि अरिकै ॥ और ज्योंत बलि होत न तबहीं । चन्द्र-वर्त्म बिच ऊग्यो जबहीं ॥ १४५ ॥

मालती यथा ।

सुमन लखे लतिका अनन्तमें । सरघनको सुख है

वसंतमें ॥ मनमहँ मोद न भौंरके रती । खिलति न जौंलगि मालती लती ॥ १४६ ॥

प्रियंवदा ।

नयन रेणु कन जाहिके परैं । मरत पीर नहिं धीरसो धरैं ॥ रहति मो हगनमें अरी सदा । तिय सरोजनयनी प्रियंवदा ॥ १४७ ॥

रथोद्धता ।

है प्रभुत्व जगमध्य जो महा । भुक्तभुक्त सुख सात तौ कहा ॥ राम पाइ मन नाहिं शुद्ध तो । तुच्छ जानि पुरुषार्थ उद्धतो ॥ १४८ ॥

द्रुतपा छन्द ।

जिनहिं संग सिगरी निशि जागे । नयन रंग जनु जावक पागे ॥ गहरु होत रिस तासु सँभारो । उतहि लाल द्रुत-पाउँ न धारो ॥ १४९ ॥

पंकअवालि ।

मोहन बिरह सतावत बालहि । बाइ बकति नहिं जानति हालहि ॥ बासर निशि अँसुआ बरषावति । पंक-अवलि जहँई तहँ ठावति ॥ १५० ॥

अचलधृतिछन्द ।

कुलिश सरिस वरदशननि दरशित । पुरुष वचन मुख कढ़ति कहत हित ॥ सब तोहिं कहत मृदुल तन अनुचित । तिय तुअ युगुल अचल धृति उर नित ॥ १५१ ॥

पद्धरियलक्षण-दोहा।

सोरह सोरह चहुँ चरण, जगन एक दै अन्त।
छन्द होत यों 'पद्धरी', कह्यो नागभगवन्त॥ १५२॥

पद्धरिय छन्द-यथा।

न भरै निशि घन तम भय विशाल। पद अटकत कंटक दर्भजाल॥ मन सुमिरत भयभंजन गोपाल। 'पद्धरिय' प्रेम मदमत्त बाल॥ १५३॥

सत्रहमात्राप्रस्तारके छन्द-दोहा।

सत्रह मत्ता छन्दमें, 'धारी' त्रिजयो नीक।
'बाला' तिरग पचीससै, चौरासी दै ठीक॥ १५४॥

धारी यथा।

मयूरपखा शिरमें थिर कायेः। सुपीत पटा उरमें उरमाये॥ चलै मुखचन्द विलोकि कुमारी। गये तुलसी वनमें गिरिधारी॥ १५५॥

बाला-यथा।

मोरके पक्षको मुकुट आला। कंठमें सोहती मुक्तमाला॥ श्यामघनरूप तनु हगविशाला। देखि री देखि गोपाल बाला॥ १५६॥

अठारहमात्राके छन्द-दोहा।

प्रगट अठारह मत्तको, 'रूपामाली' होइ।
वृत्ति सु इकतालीस.सै, इक्यासी जिय जोइ॥
नौ गुरु 'रूपामालिया' अनियम 'माली' वस।
सुयश संग प्रति पायमें, छन्द होत 'कलहंस'॥१५७॥

रूपामाली यथा ।

नेहाकी बेली बोयों जीमैं । आछो थाल्हो कै राख्यो हीमैं ॥ उत्कंठा पानी दै पाली है । प्यारीजीको रूपा-माली है ॥ १५८ ॥

माली छन्द ।

मुरली अधर मुकुट शिर दीन्हे है । कटि पट पीत लकुट कर लीन्हे हैं ॥ को जानै कब आयो सुनि आली । उरते कढ़त न केहूँ बनमाली ॥ १५९ ॥

कलहंस छन्द ।

मन वाम शोभ सरसी किन्ह नैये । मुख नयन पाणि पद पंकज ह्वैये ॥ कलधौत नूपुरनकी छवि दीसी । कलहंस चेटुअनकी अवलीसी ॥ १६० ॥

उन्नीसमात्राके छन्द-दोहा ।

उत्तम उनइस मत्तमें 'रतिलेखादि' विचारि ।
सतसठिसै पैंसठि कहत, वृत्तिभेद निरधारि ॥
सगन इग्यारह लघु करन, 'रतिरेखा' तुक चाहि ।
गनगनगन है करन है, जानि 'इंदुवदना' हि ॥१६१॥

रतिरेखा छन्द ।

सब देव अरु मुनिन मन तुलनि तोल्यौ । तब दास दृढ वचन यह प्रगट बोल्यौ ॥ इक ओर महि सकल जप तप विशेषो । इक ओर सियपति चरण विरति लेखो ॥ १६२ ॥

इन्दुवदना छन्द ।

दोषकर रंक सकलंक अति जोई । घाटि अरु बाढ़ि पुनि मासप्रति होई ॥ भाग अवलोकि इहि इन्दु बिच आली। इन्दुवदना कहत मोहिं बनमाली॥ १६३॥

बीसमात्राके छन्द-दोहा ।

होत'हंसगति'आदि दै, छन्दनि मत्ता बीस ।
दश हजार नौसै उपर, गनो भेद छयालीस ॥
बीसै कल बिन नियम 'हंसगति' सोहै ।
मोभासोमो 'जलधरमाला' जोहै ॥
भोरन विप्र साहि'गजविलसित'तन है ।
द्वौ दीप 'दीपकिय' कहत कवि जन है ॥ १६४ ॥

हंसगती-यथा ।

जिन जंघन कर रूप लियो बिन कारन। बारण काढै दंत फिरत दरबारन॥ चरण बयेहू अरुण बाज नहिं आयउ । तासु हंसगति सीखत किन बौरायउ ॥ १६५॥

जलधरमाला छन्द ।

चौहाँ नच्चै विपुल कलापी येरी । पीपी बोलै पपिहो पापी बैरी ॥ कैसे राखैं विरहिनि बाला जीको । जारै कारी जलधरमाला हीको ॥ १६६ ॥

गजविलसित-यथा ।

नागरि कामदेवनृपकटक प्रबलु है। भौहैं कमानभाल

वर तिलक सुशर है॥प्रेम सिपाह अश्व हग चपल जुअति है । तंबु निजंबु जानि गजविलसितगति है ॥ १६७॥

दीपकी—यथा ।

यों होत है जाहिरे तोहिं ये श्याम।ज्यों स्वर्णसीसी भरचो ऐन मद बाम॥तू श्याम हिय बीच यों जाहिरे होत । ज्यों नीलमणिमें लसै दीपकी जोत ॥ १६८॥

लक्षण ।

'विपिनतिलको' ललनगोनरेरंगना।गवन पियतरहि गुरु प्रगट'धवल'हिगना॥छंद'निशिपाल'किय भौनगुल गौन रे।'चन्द्र'सब लघु बरण रुद्र गुरु जौन रे॥१६९॥

विपिनतिलक ।

भुवनप्रति रामप्रति कैसे के जंगना।अग्नि वनवास लिये संग लै अंगना॥जहँसु तहँ दास दमकै मनो दामिनी।विपिनतिलकै सकल वै भईं भामिनी ॥१७०॥

धवल—यथा ।

सुरसरितजल अमल सुचित्त मुनिवरनिको । गिरिश अंग अहि अंग वसन विधि घरनिको ॥ संगत गिरि तुहिनगिरि शरदशशि नवल है।सब उपर अधिक सियपति सुयश धवल है ॥१७१॥

निशिपाल—यथा ।

लाज कुल साज गृहकाज बिसरायकै।पालगत लाल किहि जाल इत आइकै॥आशु चलिजाहि बलि तासुकिन तासुके।भाल हुअ लाल निशि पालगत जासुके॥१७२॥

चन्द्र—यथा

कमल पर कदलिजुग तिनहिं पर गिरियुगल ॥ तिनहि पर विनहिं अवलम्ब सरवसजल ॥ निरखि बिबि गिरि बहुरि कम्बु भै चकित मति । उपर जगमगि रह्यो चन्द्र इक विमल अति ॥ १७३ ॥

इक्कीसमात्राके छन्द-दोहा ।

'पवंगादि'इकईसमें, कीजै छन्दविचार ।
सत्रह सहस रु सातसै, इग्यारह प्रस्तार ॥
चारि चकल इक पंचकल, जानि 'पवंगम'बंस ।
तीनि वेर पिय रागना,छन्द होत'मनहंस'॥१७४॥

पवंगम—यथा ।

यक कोउ मलयागिरि खोदि बहावतो।तौ कत दक्षिण पौन तियानि शितावतो ॥ व्याकुल विरहिनि बालकखै भरि नैनको। निंदति बारहिबार पवंगम सैनको १७५॥

मनहंस यथा ।

खरयूथ मध्य तुरंग शोभ न पावई । नहिं स्यारमण्डल सिंह द्वौ सँग बावई॥खल संग त्यों जिय संतके दुखदाउ है । मन हंसके नहिं कागसंगति चाउ है॥१७६॥

बाईसमात्राके छन्द--दोहा ।

'मालत्तीमाला'दि दै, छन्द बाइसै मत्त ।
भेद अठाइस सहस पर, सै सत्तावन तत्त ॥ १७७॥

लक्षण ।

सर्वैदीहा'मालतीमाला' साधा। मोकनों द्वै दुज वर

प्रियम 'असंबाधा' ॥ दुजबर नंदनँदनसरकर्न 'बानिनी' छै। जानहु 'वंशपत्र' भरनो भम लहु गुरु है ॥ 'समदविलासिनी' निज भजै न शंख करहो । नल रण भाग सातयुत जानहिं 'कोकिलको' ॥ मोतोयोंसोगो करिकै 'माय' हिपूरो। वेई बर्ना नृत्यगती 'मत्तमयूरो' ॥ १७८ ॥

मालतीमाला—यथा ।

कित्ती तेरी भूमै है ज्यों कैलाशा । कैलाशामैं जैसे शम्भूको बासा ॥ शंभूजूमैं गंगाजूकी धारासी । गंगाजूमैं मालतीकी मालासी ॥ १७९ ॥

असंबाधा—यथा ।

रात्यो द्योवै वाम जपत अति वै तोपै तू ताहीको नाम कहति मति ले मोपै ॥ पापी पीडावंत जगत जन सुनु राधा । जाके ध्याये होत अकलुष असंबाधा ॥ १८० ॥

बानिनी—यथा ।

ललित दुकान द्वार देख शुभ को न आवै । सुमुखि सुबोल भूलि को नहिं बिकाइ जावै ॥ दिन दिन होति दास अतिरूपबानिनी है । कारि बहु भावलेति मनु लेति बानिनी है ॥ १८१ ॥

वंशपत्र—यथा ।

घूंघुरवारि श्याम अलकै अतिछबि छलकै । चारु मुखारविन्द लुब्ध्यो कि भँवर ललकै ॥ शुभ्र बुलाक

मुक्तद्युति कैछबि तिहुं पुरकी।दासतु बंशपत्र यह कैसो नक्तमसुरकी ॥ १८२ ॥

समदविलासिनी-यथा ।

कुच खुली जानि ऐंठि अँगिरानि भिति धरिकै । लखत गुपाललाल पट ओट ओट करिकै॥परशत भूमि केश उर लाज लेश न कहूं । समदविलासिनी वसन तो सँभार अजहूं ॥ १८३ ॥

कोकिलक-यथा ।

अधर पियूष पान तियको न करै जबलों।मधुर शृंगार उक्ति कविकी न लगै तबलों॥पियत न आम्र और मधुको जबलों तिलको । तबलगि शब्द होत मधुरो नहिं कोकिलको ॥ १८४ ॥

माया-यथा ।

काहेकी कीज मन एती दुचिताई । काहूसों वाकी लिपि मेटी नहिं जाई॥ताहीको ध्यावै मन वाचा अरु काया । सोई पालैगो जिन देही निरमाया ॥ १८५ ॥

मत्तमयूर-यथा ।

देख्यो वाही अंगप्रभाको सुनि बाला।जान्यो है है आवत कारी घनमाला॥ आयो चाहै आध घरीमें वनमाली।नचै कूकै मत्तमयूरो सुनि आली ॥१८६॥

तेईसमात्राके छन्द—दोहा ।

'हीरक' 'हठ़पट' आदि दै, तेइस मत्त अनंत ।
छयालिस सहस रु तीनिसै, अडसठ भेद कहंत ॥

रलतलायकल कम, 'दृढपट' गुरु जत नित्त ।
तीनि टगन यक रगन दै, 'हीरक' जानो मित्त॥ १८७॥

दृढपट-यथा ।

पहिरत जामा शीनको चहुं था लगि झूम्यो। बंदनि बांधतहूं दुहूं हाथनिमें घूम्यो ॥ डारि दयो री पेंचमें मेरो मन आली। दृढ पटुको कटि कसतही मोहन वनमाली ॥ १८८ ॥

हीरक छन्द ।

जाहु न परदेश ललन लालच उर मंडिकै। रतननिकि खानि सुतिय मंदिरमें छंडिकै॥ विद्रुम औ लालनिसम ओंठनि अवरेखिये। 'हीरक' अरु मोती असम दंतनि लखि लेखिये ॥ १८९॥

चौबीस मात्राके छन्द-दोहा ।

'लोला'-दिक अहिपति कह्यो, छन्दमत्त चौबीस ।
दश पचहत्तर सहस पर, जानो वृत्त पचीस ॥१९०॥

लक्षण ।

पाँचो पाँचो गोदिजविय 'वासंती' कोछै। भासं मत्तन ताटकै देखो जात 'चकित' है॥ गो कर्नो पियमो कर्नै द्वै लोद्दुग 'लोला'। 'विद्याधारी' सब गुर अनियमहै है 'रोला' १९१

वासंती छन्द ।

देखे माते भौंर करत ये दौरा दौरी। आवैंगे गोपाल सदनको जोरा जोरी ॥ वैरी बैठी शोच करति हैं जीमें भूले। लागो चैतो मास विमल वासंती फूले ॥१९२॥

चकिता-छन्द ।

पीतवसनकी काया सोती मोहनि मनकी । सोहति सजनी त्यों पाटीरी खौरनि तनकी ॥ तो तनकबके हेरे आली नेसुक तकि तैं ॥ निश्चल अँखियां सोहैं मानो खंजन चकितैं ॥ १९३ ॥

लोला-छन्द ।

आयेहू तरुणाई लीन्हे हो लरिकाई । होती क्यों सखियां में आपै आप हँसाई॥लज्जा वैरिनि मानो ठानो मंजुल बोलैं । प्यारे प्रीतमजूसों कीजै कामकलोलैं १९४

विद्याधरी-छन्द ।

त्रिया होती वैभौमें आनन्दैकारी । आपतकाले जीकी शिक्षा देनेवारी ॥ सुक्खो दुःखे हीते नाहीं होती न्यारी । ताते हूजै मेरे भाई विद्याधारी ॥ १९५ ॥

रोला ।

रवि छबि देखत घूघू घुसत जहां तहँ बागत ।कोकनिको ताहीसों अधिक हियो अनुरागत ॥ त्यों कारे कान्हहि लखि मनु न तिहारो पागत । हमको तौ वाहीते जगत उज्यारो लागत ॥ १९६ ॥

पचीस मात्राके छन्द-दोहा ।

'गगनांगा'-हि पचीस कल, भेद होत हैं लाष ।
इकइस सहस रु तीनिसै, तिरानवे पुनि भाष॥१९७॥

पुनः ।

सौकल चारि पचीसको, छन्दजाति 'गगनांग' ।
पगपग पांचो गुरु दिये, अतिशुभ कह्यो 'भुजंग' ॥ १९८॥

गगनांगना—छन्द ।

निरखि सौतिजन हृदयनि रहै गरउको ढंगना ।
पटतर हित सतकविके मनको मिटैफलंगना ॥
वदन उघारि दुलहिया क्षणकु बैठि कारि अंगना ॥
चन्द पराजय साजहि लजित करहि गगनांगना॥ १९९

छब्बीस मात्राके छन्द—दोहा ।

छब्बिस कलमें 'चंचरी', आदि लाख गनि लेहु ॥
सहस छानवे चारिसै, अट्ठारह कहि देहु ॥ २०० ॥

पुनः ।

तीनि रागना पियहि दै, रात 'चंचरी' चारु ।
सोरह दश जाति, अन्त गुरु, नाम 'विष्णुपद' धारु २०१

चंचरी छन्द ।

फागु फागुनमास बीतत, धाम धामनि छंडिकै ।
चैतमें वन बाग वापिनि, में रहै वपु मंडिकै ॥
फूल रंग सजे लता द्रुम, भौंर वाद्य बजावहीं ।
कीर कोकिल सारिका मिलि, चंचरी कल गावहीं २०२

विष्णुपद छन्द ।

कैसे कहों सहससुरपतिसे सिगरे हष्टिपरै । दास शेष सत सहसयोग कहबेको कहत डरै॥ कह्यो लिख्यो चाहै

अनदेखे तू निज ओर तकै । है यह सहस हजार विष्णु
पद महिमा लिखि न सकै ॥ २०३ ॥

सत्ताइस मात्राके छंद-दोहा ।

'हरिपद' आदि सताइसै, जानै छन्द अनेक ।
तीनि लाख सत्रह सहस, आठैसै दश टेक ॥ २०४ ॥

हरिपद छंद ।

बिथा और उपचार अब तू करै सु कौने ज्ञानु ।
अजौं न कछू नशान्यो मूरख कह्यो हमारो मानु ॥
पाप विवश गौतमकी तिय ज्यों मति ह्वै रही पषानु ।
तासु भगति जो दास चहै तौ हरिपद उरमें आनु ॥२०५॥

अट्ठाइस मात्राके छंद-दोहा ।

अट्ठाइसमें 'गीतिका', आदिक कह्यो फणीश ।
पांच लाख चौदह सहस, द्वैसै पर उनतीस ॥ २०६ ॥

लक्षण-दोहा ।

चारि सुगण धज 'गीतिका', भरननजभय 'नारिन्द' ।
अनियम वरन नारिन्दगति, 'दोवै' कह्यो फणिन्द२०७॥

गीतिका ।

इहि भांति होहु न बावरी बलि चेत जी महँ ल्यावहू ।
वृषभानको यह भौन है कह कान्ह कान्ह बतावहू ॥
मुसुकाति हो किहि देखिकै केहि देखि गात गोवावहू ।
कर बीन लै अतिलीन ह्वै यह गीतिकाहि सुनावहू २०८

नारिन्द छंद ।

सिंह बिलोकि लंक मृग दृग बरु चाल करी मदधारी ।

जानहिं आपु जाति निज मनमहँ करैं प्रीति अधिकारी ॥
कोल किरात भिल्ल छबि अद्भुत देखहिं होंहिं सुखारी ।
राम बिरोध सुखहि वन विचरहिं शत्रु नारिन्दकुमारी २०९

दोवै छंद ।

तुम बिछुरत गोपिनके अँसुवा ब्रज बहि चले पनारे ।
कछु दिन गये पनारेते वै उमड़ि चले ज्यों नारे ॥
वैं नारे नदरूप भये अब कहो जाउ कोइ जोवै ।
सुनि यह बात अयोग योगकी है है समुदन दोवै॥२१०

उनतीस मात्राके छंद-दोहा ।

उनतिस मत्ता भेदमें, 'मरहट्टा' दिक देखि ।
आठ लाख बत्तिस सहस, चालिस भेद बिशेषि ॥२११॥

मरहट्टा-छंद ।

सुनिमाल द्रुतिय उरजनकी नाईं निपटहि प्रगट न होईं ।
अरु गुज्जरयुवतिपयोधरकी विधि निपट न राखहु गोईं॥
करि प्रगट दुरेके बीच राखिये यों अक्षरकी चोज । ज्यहि-
विधि मरहट्टवधू राखतिहैं बिच कंचुकी उरोज ॥२१२॥

तीस मात्राके छंद-दोहा ।

तीस मत्तमें 'सारँगी', 'चतुर्पदो' 'चौबोल' ।
तेरह लख्ख छयालिस सहस, दुसै उन्हत्तरिडोल ॥२१३॥

पुनः

तथि ग 'सारँगी' 'चतुरपद' दुकल सात चौमत्तु ।
तीस मत्त 'चौबोल' हैं, सोरह चौदह तत्तु ॥ २१४ ॥

सारंगा छन्द ।

देखो रे देखो रे कान्हा देखीदेखा धावो जू ।
कालिन्दीमें कूद्यो कालीनागै नाथ्यो लावो जू ॥
नच्चैं बाला नच्चैं ग्वाला नच्चैं कान्हाके संगी ।
बज्जैं भेरी मृदंगी तम्बूरा चंगी सारंगी ॥ २१५ ॥

चतुरपद छन्द ।

सँग रहे इन्दुके सदा तरैया तिनके जिय अभिलाषै ।
भुवनजनित कटिबरषा ऋतुको तिहि इन्दुवधूसबभाषै ॥
यह जानि जगतमें रूप रुखी है वासर सुमति बतावै ।
अतिकूर ककाररूप बिनु चीन्हे परम चतुरपदगावै२१६

चौबोल छन्द ।

सुरपतिहित श्रीपति वामनह्वैबलि भूपतिसों छलहिचह्यो।
स्वामिकाजहित शुक्र दानहूँ रोक्यो बरु दृगहानिसह्यो ॥
सुमति होत उपकार लखहि तौ झूठो कहत न शंकगहै ।
परअपकार होत जानहिं तौ कबहुं न सांचौ बोलकहै२१७

इकतीस मात्राके छन्द-दोहा ।

इकतिस मत्ता भेदमैं, छंद 'सवैया' जोहि ।
एक लाख अठहत्तरे,सहस तीनिसै नोहि ॥ २१८ ॥

यथा ।

अरब खरबते लाभ अधिक जहँ चिन हर हासिल लाद पलान।सेतिहि लय देवै क्षाराजी और हि दये न अपनो ज्यान॥ऐसो राम नामको सौदा तोहिं न भावत

मूढ अयान । निशि दिन जात मोहवश दौरत करत सवैया जन्म सिरान ॥ २१९ ॥

रूपसवैया छन्द-दोहा ।

'रूपसवैया' बत्तिसै, कला लाख पैंतीस ॥
चौबिस सहस रु पांचसै, अठहत्तरविधि दीस ॥२२०॥

लक्षण प्रति तुक ।

आठो कर्ना पाये दीन्हे ब्रह्मा छंदै जानो धीरा ।
सातो हारा सुप्रीमो पुनि सुप्रीमो गुरु है 'मंजीरा' ॥
कारि हारा भोगहि कर्ना पीमहि मागो 'शंभू' को अंसी ।
आठो मोनो ठानो डंडो गुरयुगसहित परम छबि 'हंसी' ॥
'मत्ताक्रीडा' चारो कर्ना यकल चतुर्दश गुरु तल धरियै।
'सालू' रकार बिय गुरु छेब्बिस लघुझलपर प्रगट बहुरिगुरु करियै॥ जानि 'क्रौंचौ' गोलयगोलयदुजकारि त्रिगुणसगुन झर परत्यै। भोत तुनी तो लगनि लखिय ये 'तन्वी' की है॥ गोविंदा तेरी इच्छाकेति शंभू ब्रह्मा ठानै जू । तूही संसारै विस्तारै तूही पालै औ ज्यावै तू ॥ २२१ ॥

मंजरी छन्द ।

मोह्यो री आली मेरो मन श्रीवृन्दावन शोभा देखे ।
देखे रीझैगी तोहू अति मैंही भाषति रेखा रेखे ॥
ए री कान्हा तू को निर्त्तन कोऊ चित्त न राखै धीरा ।
जोटी जोटा नच्चै ग्वालिनि बज्जै झालरि औ मंजीरा२२२

शम्भू छन्द ।

तिय अरधंगा शिरमें गंगा गल भोगीराजा राजै जू ।

निरखै सत्ता निज नाचत्ता डमरू डौडौडौ बाजै जू ॥ संग बेताली कर दै ताली सुखदानी बानी गावै जू । धनि ध्यानी ते जगु जानी जे नित ऐसो शंभू ध्यावै जू॥२२३॥

हंसी छन्द ।

जाको जी जासों पाग्यो सो सहजउ तदपि सुखद अति होई । जो नाहीं जीको भावै सो अतिशुभ समुझि चहत किमि कोई ॥ कलब (?) कीको कैसे भावै यदपि सुकृत अति जगत प्रशंसी । ससारौ नीको लागै प अनकन कबहुं चुगति नहिं हंसी ॥ २२४ ॥

मत्ताक्रीडा छन्द ।

काहूको थोरो दोषीके सहन कहत प्रभु परम विपति-को । सो तो जानै संसारै नारद सन भगत सहउ दुख अतिको ॥ काहू काहू भूले भूले त्रिभुवन पति बकसत शुभ गतिको । देखा हाथी मत्ताक्रीडा जलमहँ करत न रहेउ भगतिको ॥ २२५ ॥

सालू छन्द ।

सौदामिनि घन जिमि विलसत हारि पहिरि पियर पट सखि उहि रुखमें।देखत कलुखभयो दिन उडुगण हुत-भुक परिय रुइय घन दुखमें॥त्योंहीं इहि रुख कुंवारि य-मुनतट निरखि वरषत सुखसुखमें।सालू रंग संग लसत सुतन रुचि छन रुचिसरिचमकति तिमि मुखमें॥२२६॥

क्रौंच छन्द ।

सेरन कैसी पौरुष बातैं किमि करि कह उडुगणबिच बरणी । क्यों शुक सारीलौं पढि जानै यतनि करिबक औधक घरणी ॥ ज्ञानिय विद्या जानु जनाये नहिं जड कबहुं बुधनि यह बरणी । तूल क्रौंचो क्यों करि हँसैं गनि गनि धरत धरत पग धरणी ॥ २२७ ॥

तन्वी छन्द ।

देखि सशेकै अमल जत्तमै लोग बखानत सहि जूठहाई । आननशोभा तरुणि प्रगटिकै जीतन श्वेतवसन सजि आई ॥ फूल सरनिको मुग्धनि बस कै जाहिर भो जग मन्मथ धन्वी । जीतन ताको चितवनि शरसो धीर प्रवीन सकल करि तन्वी ॥ २२८ ॥

सुन्दरीछन्द–दोहा ।

ससग विप्र दुग सारवति, छन्द 'सुन्दरी' जान ।
पद पद मत्त बतीस गनि, चौबिस वर्ण प्रमान ॥२२९॥

सुन्दरी–यथा ।

कुचकी बढती यों छिन छिनकी मेरो मन देखत रीझिभयो। दरकी अँगिया चारिकपहिरे अरु चारिकको टुटिबंद गयो ॥ कटि जात परीहै खिन खिन खीनी याविधि जोबन जोर ठयो । जबही तब नीवी कसतहि देखै सुन्दरिको दिन द्वैक भयो ॥ २३० ॥

दोहा ।

इमि द्वै ते बत्तीस लगि, वृत्ति बानवे लाष ।
सत्ताइस हज्जार पर, चौसे बासठि भाष २३१ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राप्रस्तारच्छन्दोवर्णनं नाम पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

अथ मात्रामुक्तकछन्द-दोहा ।

घटे बढे कल दुकलहू, वहै भेद अभिराम ।
तेहि गनि मत्ता छन्दके, मुक्तकमें गुणधाम ॥ १ ॥

चित्र तथा बनीनी छन्द-दोहा ।

सोरह सत्रह कलनिको, 'चित्र' 'बनीनी' होइ ।
चारि चौकमें तीसरो, यगन कहै सब कोइ ॥ २॥

यथा ।

लीन्ही निज मोल भाय चोखे । दीन्ही तुमको बिथा अजोखे॥कीजै अँखियानकी कनीनी । ल्याई सुविचित्र हो बनीनी ॥ ३ ॥

नंदलाल गने न शीत औ घाम । सेवै तुव द्वार आठहू याम ॥ फूकती तुम तासु लेतही नाम । पवि चाहि कठोर तोहि यों बाम ॥ ४ ॥

दोहा ।

सत्रह अट्ठारह कलनि, छन्द 'हीरकी' तन्त ।
नन्द धुजनि विरमति चलै, दुकल त्रिकलहू अन्त॥५॥

यथा ।

दास कहै बुधि थकै धीरकी । देखि प्रभा अद्भुत पाटीरकी ॥ बेशरिकी केशरिया चीरकी । वारनीकी ढार नीकी हीरकी ॥ ६ ॥

पुनः ।

दतनकी चारु चमक देखि देखि । बिज्जुछटा मन्द प्रभा लेखि लेखि ॥ मोहित ह्वै दास घरी चारि चारि । कोन चलै जीवन घन वारि वारि ॥ ७ ॥

दोहा ।

अट्ठारह बनइस सकल, छन्द 'भुजंगी' मानि ।
नैनततगहै 'चन्द्रिका', वाकी गति पहिंचानि ॥ ८ ॥

भुजंगी छन्द ।

लला लाडिलीकी लसी पीठिमें । तहां श्याम वेणी परी दीठिमें ॥ मनो कांचनी कदलीपत्रहै । भुजंगी परी सोवती तत्र है ॥ ९ ॥

चांद्रिका छन्द ।

कुरब कलरवौहू करै बोलिकै । द्विरदगति हरै मन्दही डोलिकै ॥ दशनद्युति लजीली करै दामिनी । हसनिसन जिते चन्द्रिका भामिनी ॥ १० ॥

नांदीमुखी-दोहा ।

पच लहू पर मगन त्रय, 'नांदीमुखी' विचित्र ।
गति लीन्ही नियमो तजै, वहै नाम है मित्र ॥ ११ ॥

यथा ।

जन्म प्रभु लियो अवधमें लूटि मांची।लुट्यो सब सबनि वस्तु एकौ न बांची ॥ द्विजन किय बिदा साकवादे सुखीकै । नृपति जब उठै श्राद्ध नांदीमुखी कै ॥ १२ ॥

दोहा ।

वोनईस के बीस कल, छन्द होत 'चितहंस' ।
नन्द करन द्वैअन्तरो, कै है रलअवतंस ॥ १३ ॥

यथा ।

पद्म बैठक मुक्त भोजन छोंडिकै । तू सहै दुख भूख कोपनु वोडिकै ॥ दास हास करै घनेबक बंस रे। तोहि ह्यां वसु वास उचित न हंस रे ॥ १४ ॥

पुनः ।

भौंर नाभी बीच गोते खाइ खाइ।बूडिगो री चित्त मेरो हाइ हाइ॥ चाहि गिरि गिरि गाहि तिरि तिरि फेरि फेरि । दास मेरे नैन थाके हेरि हेरि ॥ १५ ॥

सुमेरु छन्द-दोहा ।

कल वोनइस बीसको, छन्द 'सुमेरु' निबेरि ।
लह मगन लहु भगन यों, कहूं अन्त लहु फेरि ॥ १६ ॥

यथा ।

करै को वाकु चरचा लोगु आली । लुगाईं क्या करैंगी कै कुचाली ॥ प्रभा जो कान्हजूको ऊतरी है । सो मेरे नैन दूकी पूतरी है ॥ १७ ॥

प्रिया छन्द-दोहा ।

बाईसै तेईस कल, छन्द 'प्रिया' पहिचानि ।
चलनि चारु संगीतकी, वरणत हैं सुखदानि ॥ १८ ॥

यथा ।

तो छूटत छूटी सिगरी शीत लई है। यों अंग सबै वा दिनते आगि भई है ॥ राखै रहि है दास हमै दूरि हियासों।यो पथी सदेशो कहिवी प्राणप्रियासों ॥ १९॥

हरिप्रियाछन्द-दोहा ।

बीस इकीसौ बाइसौ, कला 'हरिप्रिया' छन्द ।
तीनि छकल पर देहु गुरु, नन्दकि है गुरु बन्द ॥२०॥

यथा ।

हरति जु है दीननको संकट बहुत है। विनवत तिहि चितवनि हित दास दास है॥ करनि हरनि पालनि तू देवि आपुही। शंभुप्रिया ब्रह्मप्रिया हरिप्रिया तुही॥२१॥

पुनः ।

करति जु है दीननिके संकटको हीन। विनवत तिहँ चितवनि हित दास दास दीन ॥ करनि हरनि पालनि तू देवि सर्व ठौर । शंभुप्रिया ब्रह्मप्रिया हरिप्रिया न और ॥ २२ ॥

पुनः ।

हरति जु है दीननिको संकट बहुतेरो। बिनवत तिहि चितवनि हित दास दास तेरो॥ करनि हरनि पालनि तू देवि आपुही है।शंभुप्रिया ब्रह्मप्रिया हरिप्रिया तूही है २३

दिगपाल छन्द--दोहा ।

होत छन्द 'दिगपाल' कल, बाईसो तेईस ।
चौबीसो पूरो भयो, है दूनो दिगईश ॥ २४ ॥

यथा ।

सो पाय आजु डोलै मही शीत धूपमें । बिधि बुद्धि तुच्छ जाकी महिमा अनूपमें ॥ हर जासु रूप राखै हियो बीच सब दाहि । दिगपाल भाल जाकी रज राजती सदाहि ॥ २५ ॥

पुनः ।

सखि प्राणकी सँघाती प्यारी नहीं लगैरी । सुखदानि बानि तेरी अति दूरिको भगै री ॥ अलिकान्ह प्राणमेरो निज साथ लै गयो है । मनु आपनो निमोही वह मोहि दै गयो है ॥ २६ ॥

अविधा छन्द ।

सगगना रगगना जगंनु लगै । रगगना रगगतनाकोर दगै ॥ 'अविधा' छन्द पाय नाग कहंत ।सोरहो सत्रहो अठारह मन्त ॥ २७ ॥

यथा ।

कान्हकी त्योंर तेग चोखी है । रीति यामें कहा अनोखी है ॥ पविसे मों हिये जु लागि उठै । अविधा ज्यों वियोग आगि उठै ॥ २८ ॥

सायक छन्द ।

सगनागो सगनागो सगना । रगना दीहु नहीं दोस-

गना ॥ लहु आद्यंत परे सत्रह लेखि । नाम है 'सायक' या छन्दहि देखि ॥ २९ ॥

यथा ।

अँखियां काजरकी कोर नहीं । भृकुटी औ तिरछी तौर नहीं ॥ दास ये प्राणनिके घायक हैं । बिसु हैं खंजर हैं सायक हैं ॥ ३० ॥

भूप छन्द ।

सगनागो सगना । रग्गना आदि भना ॥
लहुवो अंत भलोइ । 'भूप' शिव सूरकलोइ ॥ ३१ ॥

यथा ।

भावती जाति किते । नेक तो ताकि इते ॥
तेरोई घायल हौं । भूपसो हाय लहौं ॥ ३२ ॥

मोहनी छन्द ।

सगनागो सगनागो सगनागो सगना ।
रग्गना आदि दियेहु न कछू दी सगना ॥
बाईसै तेईस कल अंत लहु चौबिस होइ ।
'मोहनी' छंद कहै याहि सयाने सब कोइ ॥ ३३ ॥

यथा ।

ढूंढे हू है न तिती पंकजके काननमें । सुखमा दास जिती मोहनके आननमें ॥ न तिती जानि परै मन्मथके बाननमें । मोहनी रीति जिती है बँसुरीताननमें ॥३४॥

अथ गीताप्रकरण—दोहा ।

चौबिस कलगति चच्चरी, 'रूपमाल' पहिचानि ।

लघु दै आदि पचीस कल, 'सुगीतिका' उर आनि ॥
द्वैद्वै आदि छबीस करि, 'गीता' कहौं विशेषि ॥
गुरु दै अन्त सुगीतिके, 'शुभगीता' अवरेखि ॥
करि गीता गुरु अन्त 'हरि,-गीता' अट्ठाईस ॥
अन्त लहू 'अतिगीत' करि, सताइसौ उनतीस ॥२५॥

रूपमाल-यथा ।

जाति है बन बादिही गळ बाँधिकै बहु तंत्र । पामहीं किन जपत कामद रामनाम सुमंत्र ॥ ज्ञानकी करिगूद-ड़ी दृढ़ तत्त्व तिलक बनाउ । दास परम अनूप सगुन सरूपमाला गाउ ॥ २६ ॥

सुगीतिका छन्द ।

हजार कोटि जु होइ रसनाएक एक मुखेश्र।इडा अर-ब्बिन जो बसै रसनानिमंडि समग्र ॥ खरोरहै दिगदास तनू धरि देव परम पुनीत । कहै कछू अहिराज तव ब्रजराज तुव जस गीत ॥ २७ ॥

गीता छन्द ।

मन बावरे अजहूं समुझि संसार भ्रम दरियाउ।इहि तरनिका यह छोड़िकै कछु नाहिं और उपाउ ॥ लै संग भक्ति मलाह करि आरूप सों लै लाउ । श्रीरामसीता चरित चरचा शुभ्र गीता नाउ ॥ २८ ॥

शुभगीता छन्द ।

विलोकि दुलहिनि बेलिकै तन फूल माल बिराजई ।

रसाल दूलह शीश सुन्दर मौरकी छबि छाजई ॥ वसंत-
के गृह आजु व्याह उछाह परम पुनीत है । चकोर
कोकिल कीर भामिनि गावती शुभ गीत है ॥ ३९ ॥

हरिगीता छन्द ।

वनमध्य ज्यों लखि साज संयुत व्याधवासहि सज्जतो ।
पशु पक्षि मृगया योग निज निज जीव लै लै भज्जतो ॥
त्यों मोह मद पैशुन्य मत्सर भाजि जात सभीत है ।
जब दासके उर भक्तिसंयुत ज्यों सतो हरिगीत है ॥ ४०

अतिगीता छन्द ।

चैत चांदनिमें उतै मुरलीबजाई नंदनंद । तान सोवति
तानको गलितान किय विधि बंद बंद ॥ ता समयवृष-
भानुनन्दिनि ह्यां गई चलि फंद फंद।मोहि मोहनऊगिरे
अवलोकिकै मुखचंद चंद ॥ ४१ ॥

शुद्धगा लक्षण ।

यगन गुरू कारि चौगुनो, छन्द 'शुद्धगा' होइ ॥
अन्त घटै कल दुकलहू, वहै कहै सब कोइ ॥ ४२ ॥

यथा ।

झखै बैठी कहा बौरी अरी कान्हा कहां जैहैं । सुतो
याही घरीमें देखि तेरे पासही ऐहैं ॥ सिखायो मानिकै
मेरो सितारा लै बजावै तू।सखीवा द्योसकी नाईं केदारा
शुद्ध गावै तू ॥ ४३ ॥

लीलावती छन्द ।

द्वै कल दै फिर तास कल, 'लीलावती' अनेम ।

दुगुन पद्धरियके किये, जानो वहै सप्रेम ॥ ४४ ॥

यथा ।

पीताम्बर मुकुट लकुट वनमाल वे सोईदरशावे । मुसुकानि विलोकनि मटक लटक बढि मुकुर छाहते छबि पावे ॥ मो विनय मानि चलि वृन्दावन बंशी बजाइ गोधन गावे । तौ लीलावती श्याममें तोमें नेकु न उर अन्तर आवे ॥ ४५ ॥

यथा ।

जेहि मिलत न तू तेहि रैन सांझहीते रट लावत तोहिं तोहिं।अधरात उठत करि हाय हाय पर्यंक परत पुनि मोहिं मोहिं॥कबको ढिग ठाढ़े हहा खात यह खिन्न गात गति जोहि जोहि । किय केवल तू यह लाल हाल दिन रैनि बिसासिनि कोहि कोहि ॥ ४६ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्रासुक्तछन्दोवर्णनं नाम षष्ठस्तरंगः॥ ६॥

अथ जातिच्छन्दवर्णन-दोहा ।

प्रस्तारनिकी रीतिसों, करि कछु भिन्न विभाग ॥
जाति छन्दवर्णन कियो, बहुविधि पिंगलनाग ॥ १ ॥

दोहा प्रकरण ।

तेरह ग्यारह तेरहै, ग्यारह 'दोहा' चार ॥
दोहा उलटे 'सोरठा', विदित सकल संसार ॥ २ ॥

दोहा ।

मन बालक समुझाइये, तुम्हैं विनय रघुनाथ ॥
न तरु बोलाये कौनके, आवै चन्दो हाथ ॥ ३ ॥

दोहादोष ।

प्रथम तीसरे चरणमें, जगन जोहिये जासु ॥
सो दोहा 'चंडालिनी' बोलै बिबिधि बिनासु ॥
बारह लघु बाईस लघु, बत्तिस लघु ले मानि ॥
चारि बरण दोहा कही, बाकी लघु लौं जानि ॥ ४ ॥

सोरठा ।

सोनन दीजे धाइ, भीजे नेकु बिभावरी ॥
अबै गहो जनि पाइ, सोरठानि है मेखला ॥ ५ ॥

अथ दोही—दोहरा ।

दोहाके तेरहनिमें, द्वै द्वै कला बढाइ ॥
कीजे 'दोही' 'दोहरा', एको एक घटाइ ॥

दोही ।

जनि बांह गहो हों जानती, लाल तिहारी रीति ।
हो निर्मोही नित्तके, करो दोही दिनकी प्रीति ॥ ६ ॥

दोहरा ।

जातन कनक तरचो ना, लगत चौहरो लाल ॥
मुकुतमाल हिय तेहरो, दोहरो बेंदा भाल ॥ ७ ॥

उल्लाला ।

करि विषमदलनि पन्द्रह कला, सम पायनि तेरह रहै ॥
तुक राखिअट्ठाईसकलनिपर, 'उल्लाला' पिंगलकहै ॥ ८ ॥

यथा ।

कहि काव्य कहाबिन रुचिर मति तिसु कहाबि नहिं बिरति । कह बिरतिउ लाल गोपालके चरणनि होई जु प्रीति अति ॥ ९ ॥

चुरिआला।

दोहा तलके अन्तमें और पंच कल बंद निहारिये।
नागराजपिंगल कहै 'चुरिआला' सो छंद विचारिये १०॥

यथा।

मैं प्रिय मिलन अमी गुनो बलिबिसु समुझि न तोहिं न हो रति। झटकि झटकि कर लाडिली चुरिया लाखनिकी कत फोरति॥ ११॥

ध्रुवा छन्द।

पहिलेहि बारह कल करु बहुरे हुँ सत्त।
इहि विधि छंद 'ध्रुवा' रचु उनइस मत्त॥ १२॥

यथा।

ध्रुवहि छांडि जो अध्रुव सेवन जाइ।
अध्रुव तासु नशै है ध्रुवहु नशाइ॥ १३॥

घत्ता छन्द-दोहा।

दश बसु तेरह अर्धमें, समुझिय 'घत्ता' छंद।
ग्यारह मुनि तेरह विरति, जानो घत्तानंद॥१४॥

यथा।

मोहन मुख आगे अति अनुरागे मैं जुरही शशिछबि निदरि। दुख देत सुआली बिनु वनमाली घत्ता लहि चूक तन अरि॥ घत्ता सखि सोवत मोहि जानि कछु रिस मानि आइ गयो गति चोरकी। सोयों ढिगहि चुपाइ कहि नहिं जाइ घत्ता नंदकिशोरकी॥ १५॥

दोहा ।

हरिपद दोवै चौबोलो, द्वैही द्वै तुक जानि ।
दोहा प्रकरण रीतिमें, लिख्यो दास उनमानि ॥ १६ ॥

अथ चौपैया प्रकरण-दोहा ।

चारि चरणमें जति जमक, तुक बरणनि करि नेम ।
जाति छंद बरण्यो अहिप, सोऊ सुनी सप्रेम ॥ १७ ॥

चौपैया छन्द-दोहा ।

दश बसु बारह बिरतिते, 'चौपैया' पहिचानि ।
चारि चरण चौगुण किये, होत निपट सुखदानि ॥ १८ ॥

चौपैया-यथा ।

तल बितल रसातल गगन भुवनतल सृष्टि जिती जगमाहीं। पुर राम सुथलमें कानन जलमें बाहिरहित कछु नाहीं ॥ पिय मिलहि न रामहिं तजि सिय बामहिं नहिं बचाउ कहुं भागे। सुरपतिसुत कांचो सब जग नाचो बांचो पैआँ लागे ॥ १९ ॥

लक्षण-प्रतितुक ।

दश वसु दश चारै बिरति बिचारै 'पद्मावति' तलगुरु दोई। याही बिधि ठानो 'दुर्मिल' जानो अंत सगनकरनो होई ॥ दश बसु करि योंही चौदह त्योंही अंत सगन है 'दण्डकलो'। दश बसु बसु संगी पुनि रस रंगी होत 'त्रिभंगी' छंद भलो ॥ २० ॥

दोहा ।

आठ आठ चौ कल परै, चारै रूप निशंक ।
भूलेहु जगन न दीजिये होत 'छंद' सकलंक ॥ २१ ॥

पद्मावती ।

व्यालिनिसी बेनी लखि छबिसेनी तजत न आशा मोरैं जू । शशिसो मुख शोभित लखि ह्वो लोभित लावत टकी चकोरैं जू ॥ निकसत मुख श्वासैं पाइ सुवासैं संग न छोडत भौंरैं जू । बाहिर आवति जब पद्मावति तब भीर जुरति चहुँओरैं जू ॥ २२ ॥

दुर्मिल छन्द ।

इक त्रिय व्रत धारी परउपकारी पित गुरु आज्ञा अनुसारी । निरसंचय दाता सबरस ज्ञाता सदा साधुसंगति प्यारी ॥ संगरमें सूरो सब गुन पूरो सरल सुभावं सत्ति कहै । निरदंभ भगति वर विद्यनि आगर चौदह नर जग दुर्मिल है ॥ २३ ॥

दण्डकला छन्द ।

फल फूलनि ल्यावै हरिहि सुनावै यह है लायक भोगनि की । अरु सब गुन पूरी स्वादनि रूरी हरनि अनेकनि रोगनिकी ॥ हँसि लेहि कृपानिधि लखि योगी विधि निंदहि अपने योगनकी । नभते सुर चाहैं भाग्य सराहैं फिरि फिरि दण्डक लोगनकी ॥ २४ ॥

त्रिभंगी छन्द।

समुझिय जगमें को फल मनमें हरिसुमिरनमें दिन भरिये। झगरो बहुतेरो घेरु गनेरो मेरो तेरो परिहरिये॥ मोहन बनवारी गिरिवरधारी कुंजविहारी पगु परिये। गोपिनको संगी प्रभुबहुरंगी लाल त्रिभंगी उर धरिये२५॥

जलहरन छन्द—दोहा।

लघु कार दीन्हे बत्तिसो, 'जलहरना' पहिंचानि।
तिरभंगी पर आठ पुनि, 'मदनहरा' उर आनि॥ २६॥

यथा-जलहरन छन्द।

सुदि लयउ मिथुन रबि उमड़ि घुमड़ि फबि गगन सघन घन झपकि झपकि। कारि चलति निकट तन क्षन रुचि क्षन क्षन खग अस्र झर सम लपकि लपकि॥ कछु कहि न सकत तिय बिरह अनल हिय उठत क्षणहिं क्षण तपकि तपकि। अति सकुचनि सखियन अध कारि अँखियन लगिय जलहरन टपकि टपकि॥ २७॥

मदनहरा छन्द।

सखि लखि यदुराई छबि अधिकाई भाग भलाई जानि परै फल सुकृत फरै। अति कांत मदन मुख होतहि सन्मुख दास हिये सुख भूरि भरै दुख दूरि करै॥ छबि मोर पखनकी पीत बसनकी चारु भुजनकी चित्त अरै सुधि बुधि बिसरै। नव नील कलेवर सजल भुवनधर वर इंदीवर छबि निदर मद मदन हरै॥ २८॥

लक्षण-दोहा ।

एकै तुक सोरह कलनि, 'पायकुलक' गुरु अन्त ।
चहुँ तुक भागन यमकसों, 'अलिला' छन्द कहन्त ॥ २९ ॥

पायकुलक ।

दृग आगे सोवतहु निहारों । हियते क्यों हरिरूप निकारों ॥ हों निज तन सम रतन विचारों । केहि उपाय कुलकानि सँभारों ॥ ३० ॥

अलीला छंद ।

भुँव मटकावति नयन नचावति । सिंजित सिसकिन शोर मचावति ॥ सुरत समय बहुरंग रचावति । अलि लालन हित मोद सचावति ॥ ३१ ॥

सिंहविलोकित छंद-दोहा ।

चारि सगनके द्विज चरण, 'सिंहविलोकित' येहु ।
चरण अन्त अरु आदिके, मुक्तंपदग्रस देहु ॥ ३२ ॥

यथा ।

मुनि आश्रम शोभ धरचो तिनहीं । अहि कच सँग बेसरि मोर जहीं ॥ जहँ दास अहितमति सकल कटी । कर सिंहविलोकित गति करटी ॥ ३३ ॥

लक्षण-दोहा ।

रोलामें लघु रुद्र पर, 'काव्य' कहावै छन्द ।
ता आगे उल्लाल दै, जानहु छप्पै बन्द ॥ ३४ ॥

काव्य छन्द ।

जन्म कहा बिन युवति युवति सु कहा बिन यौवन ।

कह यौवन बिन धनहिं कहा धन बिन अरोग तन ॥
तन सु कहा बिन गुणहिं कहा गुण ज्ञानहीन क्षन ।
ज्ञान कि विद्याहीन कहा विद्या सु काव्य बिन ॥३६॥

छप्पै छन्द ।

भाल नयन मुख अधर चिबुक तिय तुव विलोकि अति । निर्मल चपल प्रसन्न रत्त शुभ वृत्तिथकी मति ॥ उपमा कह शशि खंज कंज बिंबिय गुलाब बर। खंडथान थिति प्राप्त पक्क प्रफुलित सुसोभधर ॥ शारद किशोर शुभ गंध मृदु नवल दास आवत न चित। जु कलंकरहित युग सरल हित डार गहन षटपद सहित ॥ ३६ ॥

लक्षण ।

सिंहविलोकन रीति दे, दोहापर रोलाहि ।
'कुण्डलिया' उद्धत बरण, तृजति 'अमृतध्वनि' चाहि ३७

कुण्डलिया ।

सांईं सब संसारको संतत फिरत असंग । काम जारि कीन्हो भसम मृगनैनी अर्द्धङ्ग ॥ मृगनैनी अर्द्धङ्ग दास आसन मृगछाला । सुनिये दीनदयाल गरे नरशिरकी माला॥सुनिये दीनदयाल करो अजगुत सब ठाईं । कर्ण गहे कुण्डलिय विदित भयहरण गोसाईं ॥ ३८ ॥

अमृतध्वनि छन्द ।

धुनि धुनि शिर खल त्रिय गिरहि सुनत राम धनु शब्द।
लग्गिय शर झरि गगन महि यथा भाद्रपद अब्द ॥ अब्द

निनद कारि क्रुद्ध कुटिल अरि युक्ति मरत लरि । मुण्ड
परत गिरि रुण्ड लड़त फिरि खड्ग पकरि करि॥ऋच्छ
प्रबल भट उद्धत मरकट मर्दत तिहिं ध्वनि । निर्त्तत
सुर मुनि मित्र कहत जय कृत्ति अमृतध्वनि ॥ ३९ ॥

दोहा ।

पाया कुलक त्रिभंगियों, होत मुक्तपदग्रस्त ।
छन्द कहत 'हुल्लास' है, करि तुक आठ समस्त ॥४०॥

हुल्लास छन्द ।

कान्ह जन्मदिन सुर नर फूले । नभधर निशिवासर सम तूले ॥ महिते महरि अबीर उड़ावैं । दिविते देवि सुमन वरषावैं ॥ सुमनन वरषावैं हरष बढ़ावैं तजि तजि आवैं याननको । सजि तिय नर भेषनि सहित अलेखनि करहिं अशेषनि गाननको ॥ तिन लोगनिकी गति दाननकी अति निरखि शचीपति भूलि रहै । ब्रजशोभ प्रकासहि नन्द विलासहि दासहुलासहि कौन कहै॥४१

इति श्रीदासविरचिते छन्दोर्णवे मात्राजातिच्छन्दोवर्णनं नाम सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

दोहा ।

जाति छन्द प्राकृतनिके, निपट अटपटे ढंग ।
दास कहै 'गाथा-'दि दै, तिनकी भिन्न तरंग ॥
विषमनि बारह कलश मनि, पन्द्रह ठारह बीश ।
सम पद तीजो गन यगन, 'गाथा'प्रकरण ईश ॥ १ ॥

लक्षण ।

समपद'गाहू'पन्द्रह पन्द्रह अठारह ठारह'उग्गाहा'।अ-ट्ठारह पन्द्रह'गाहा'कहि पन्द्रह अठारह'बिग्गाहा'॥बीसै बीस 'खंध' कलबीसै अट्ठारह समपद'सिंघिनी'।सबकै रवि कल विषम दलनि सम अट्ठारह बीसै'गाहिनी'॥२॥

गाहू छन्द ।

शिव सुर मुनि चतुरानन, जाको लहै नहि थाहू ।
पारवार कोउ जान न, हरिनामसमुद्र अवगाहू ॥ ३ ॥

उग्गाहा ।

शिव मुनि सुर चतुरानन, जाको कबहूं नहीं लहै थाहा ।
पारवार कोउ जान न, हरिनामसमुद्र अवगाहा ॥ ४ ॥

गाहा बिग्गाहा अर्थमें जाति ।

बारह लहुआ 'विप्री' बाईसा 'क्षत्रिनी' गाहो ।
बत्तीसा सो 'बैसी',बाकी लहु है 'शुद्रिनी' बिगाहो ॥५॥

खंधा छन्द-जगनफल ।

एक जगन'कुलवंती'दोइ जगन्न'गिहिनी'सुहैसुनिखंधो ।
जगनविहीनी'रंडा''वेश्या'गावो वह जगन्नको खंधो॥६॥

गाहिनी तथा सिहिनी ।

सुनि सुन्दरि मृगनैनी,तू प्रभासमुद्र अवगाहिनी राजै॥
हंसगमनि पिकबैनी,तो लंक विलोकि'सिंहिनी'लाजै७॥

उलटि पढे गाहिनी—चपलागाथा ।

'चपलागाथा' जानो, यह दोइ जगन्नु है समे पाया ।
पिंगलनाग बखानो, गुरु दोइ तुकंतमें ठाया ॥ ८ ॥

दोहा ।

तासु 'जघनचपला' कहैं, दल दूसरे ज दोइ ॥
प्रथम दलहिमें जगनु द्वै, 'मुखचपला' है सोइ ॥ ९ ॥

विपुलगाथा ।

प्रथम पाय कल तेरहै, सत्रहै मत्त है बियनाथा ॥
तिसरे पाय ग्यारहै, चौथे सोरहै विपुला गाथा ॥१०॥

रसिक छन्द-दोहा ।

ग्यारह ग्यारह कलनिको, षटपद 'रसिक' बखानि ॥
सब लघु पहिलो भेद है, गुरु दै बहु विधि ठानि ॥११॥

यथा ।

हँसत चखत दधि मुदित। झुकत भजत मुख रुदित॥
त्रसित तियनि मिलि रहत। रिसयुत विरतिहि गहत॥
अगणित छबि मुख ससिक। शिशु तब नवरस रसिक॥ १२ ॥

खंजा छन्द-दोहा ।

सात पंच लघु जगन गो, मत्ता यकतालीस ॥
योंही करि दल दूसरो, 'खंजा' रच्यो फणीश ॥१३॥

यथा ।

सुमुखि तुअ नैन लखि दह गह्यो झखनि झख गरल मिसि भँवर निशि गिलत नितहि कंज है। निशि निमित्त ज्यों सुरतियनि मृग फिरत बनहिं बनहु अहरु अमदन सर थिर न रहत खंज है ॥ १४ ॥

दोहा ।

खंजाके दल अर्द्धपर, द्वै गुरु दे सुखकन्द ।
आगे गाहा अर्द्ध करि, जानहिं 'माला' छन्द ॥ १९ ॥

माला छन्द ।

लगत निरखत ललित सकल तन श्रम कलित ब्रज-
अधिप अंग वलित सुरतिशय सोहती बाला । मरकत
तरु जनु लवढी फलि कनकलता मुकुटमाला ॥ १६ ॥

शिष्या छन्द-दोहा ।

पहिले दलमें चौबिसै, लघुपर जगनहिं देहु ॥
पुनि बत्तिस पर जगनु दै, 'शिष्या' गति सिखि लेहु १७

यथा ।

शुभरदनि विधुवदनि गुणसदनि जगहृदनि नहिं
तोहिं सरिष्यु । कुंवरि सम विनय श्रवणसुनि समुझि पुनि
मनहिं गुनिन प्रिय प्रति रिस कुमति शिष्यु ॥ १८ ॥

चूडामणि छन्द ।

दोहा गाहाको करो, मुक्तापदग्रस बन्द ॥
नागराजपिंगल कह्यो, सो 'चूडामणि' छन्द ॥ १९ ॥

यथा ।

दिनहींमें दिनकर दिपै निशिहीमें शशिज्योति ॥
जगदम्बा द्युति दिवस निशि जगमग जगमग होति ॥
जगमग जगमग होती हीरी ज्यों गोरी चिनगारै ।
चक्रवर्ति चूडामणि जाके पग भूतल हाजारै ॥ २० ॥

अथ रण्डा छन्द ।

प्रथम तीय पंचम चरण, पहिले जानि अखेद ।
दूजो चौथे फेरि गुनि, जानहिं 'रण्डा' भेद ॥ २१ ॥

यथा ।

तेरह ग्यारह करभी वरनि नन्दभुवन हर ढरनि वोन-
इस रुद्र नोहनी अरनि । चारुसेन तिथि हरनि तिथि
रबि मता भद्रावरनि ॥ २२ ॥

दोहा ।

तिथि रवि तिथि हर तिथि पयनि, राजसेनिरड्डाहि ।
'तालंकिनि' तिथिकलअधिक, दोहासबतलचाहि ॥ २३ ॥

तालंकिनिरड्डा-यथा ।

बालापन बीत्यो बहु खेलनि।युवा गई तियकेलनि॥
रह्यो भूलि पुनि सुतबितरेलनि । जिय गल डारी तेरे
जेलनि ॥ अजहुं समुझि तजि मूरुख पेलनि । काल
पहुंच्यो शीशपर नाहिन कोऊ अड्ड । तजि सब माया
मोह मद रामचरण भजु रड्ड ॥ २४ ॥

दोहा ।

पांच चरण रचना उपर, दीजे दोहा अंत ।
सात भेद अहिपति कह्यो, नवपद रड्डानंत ॥ २५ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राजातिच्छन्दोवर्णनं नाम अष्टम-
स्तरंगः ॥ ८ ॥

अथ मात्रादण्डकवर्णन-दोहा ।

छब्बिससों बढि वर्ण जो, 'दण्डक-वर्ण' विशेषि ।
बत्तिसते बढि मत्त जो, 'मत्तादण्डक' लेखि ॥ १ ॥

झूलना छन्द-दोहा ।

दश दश दश मुनि जति चरण,छन्द'झूलना'तत्त ।
दुकवलि रहु स्वौसैतिसो, वन्तालीसौ मत्त ॥ २ ॥

यथा ।

पानि पीवे नहीं पान छीवे नहीं वाम अरु वसन राखै न नेरो।प्रानके ऐनमें नैनने ह्वै रह्यो रूप गुण नाम तेरो ॥ विरहबश ऐसेही है वैहीके महीं राखि है कै नहीं प्राण मेरो।तोहिं तकि याहि संदेहके झूलना झूलतो चित्त गोपालकेरो ॥ ३ ॥

दीपमाला-दोहा ।

दीपकको चौगुन किये,'दीपमाला' सुखदानि ।
चालिस कल शिर द्वै घटे, अन्त बढ़े'विजया'नि॥४॥

दीपमाला-यथा ।

लहिकै कुहुयामिनी मत्तगजगामिनी चली वन मिलनको नन्दलालाहि। कै सुघर मन्मत्थ रचि स्वर्नकी बेलि लै चल्यो गहि सहित शृंगार थालाहि॥संग सखी परवीन अति प्रेमसों लीन मनि आभरण ज्योतिछबि होति बालाहि । कै दासके ईश ढिग जाति लीन्हे चली भामिनी भाग्यसों दीपमालाहि ॥ ५ ॥

विजया ।

सित कमलवंशसी शीतकर अंशसी विमल विधि-हंससी हीरवरहारसी । सत्य गुण सत्यसी सन्तरस वंश-

सी ज्ञान गौरत्वसी सिद्धि विस्तारसी ॥ कुन्दसी कास-
सी भारतीवाससी सुरतरु निहारसी सुधारससारसी ।
गंगजलधारसी रजतके तारसी कीर्त्ति तव विजयकी
शंभुआगारसी ॥ ६ ॥

दोहा ।

तीनि तीनि बारह विरति, दश जति दै तुक ठानि ॥
छन्द छियालिस मत्तको, 'चंचरीक' पहिचानि ॥७॥

चंचरीक छंद ।

जाको नहिं आदि अंत जननि जनक देव कंत रूप
रंग रेखरहित व्यापक जगजोई । मच्छ कच्छ कोल
रूप वामन नरहरि अनूप परशुराम राम कृष्ण बुद्ध
कलिक सोई ॥ मधुरिपु माधव मुरारि करुणामय कैट-
भारि रामादिक नाम जासु जाहिर बहुतेरो । कोमल
शुभ वास मंजु सुखमा सुखशील गंज ताको पदकंज
चित्त चंचरीक मेरो ॥ ८ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राछंदसि वृत्तिजातिमुक्तकदण्डक-
वर्णनं नाम नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

अथ वर्णवृत्तिमें वर्णप्रस्तारभेद ।

एक वर्णको 'उक्ता' प्रकरण तासु भेद द्वै कीजै
पाठ । द्वै 'अत्युक्ता' भेद चारि हैं 'मध्या' तीनि भेद हैं
आठ ॥ चारि 'प्रतिष्ठा' सोरह विधि पाँचै 'सुप्रतिष्ठा' भेद
बतीस । षट् 'गायत्री' चौंसठि सातै 'उष्णिक' सौपर

अट्ठाईस ॥ आठै वर्ण 'अनुष्टुप्' द्वै सै छप्पन भेद कहत फणिराउ । नवो अक्षरको 'बृहती' प्रकरण भेद पांचसौ बारह ठाउ॥दशै वर्णको 'पंगति' प्रकरण भेद सहस ऊपर चौबीस । ग्यारहको 'त्रिष्टुप' प्रकरण गनि द्वै हजार अरु अडतालीस॥बारहकी 'जगती' प्रकरण तेहि भेद हजार चारि छानवे । तेरह अक्षरको 'अतिजगती' इक्यासी सत्तरपर बानवे ॥ चौदहको 'शक्करी' सोरहै सहस तीनि चौरासीय।पंद्रह'अतिशक्करी' सहस बत्तीस सुभातसै अरसठ कीय॥ सोरह 'अष्टि' सहसपै सठिशत पांच छत्तीस अधिक लै धरी । सत्रहको 'अत्यष्टि 'लाखपर यकतिस सहस बहत्तारि करी॥ अट्ठारह'धृति'छब्बिस ऐतु इकीससै ऊपर चव्वालीस । बावन ऐतु बयालिसमै अट्ठासी विधि 'अतिधृति' उनईस॥बीस वरणको 'कृति'प्रकरण है तासु भेद गनि ले दश लाखु । अड़तालीस सहस्र पांचसै और छिहत्तिरि ऊपर राखु॥ यकइस वरण 'प्रकृति' प्रकरण है बीस लाख पहिले सुनि मित्त । सत्तानवे सहस्र एकसै बावन ऊपर दीजे चित्त ॥ छन्द होय बाइस वर्णको 'अतिकृति' प्रकरण जानि अखेद।यकतालीस लाख चौरानवे सहस तीनिसै चारि भेद ॥ छन्द कहावै 'विकृति' प्रकरण तेइस वर्ण होहिं जेहि माह । लाख तिरासी सहस अठासी । छासै आठ गनै अहिनाह ॥ 'संस्कृति' नाम

वरण चौबिसको तासु भेद है एक करोरि । सतसठि लाख हजार सतहत्तरि दुइसै ऊपर सोरह जोरि ॥ 'अति-कृति' प्रकरण वरण पचीसै तीनि करोरि लाख पैंतीस । चौवन सहस चारिसै बत्तिस भेद विचारि कहत फणि-ईश ॥ 'उत्कृति' होत बरण छब्बिसको भेद छ कोटि यकहत्तरि लक्ष । आठ हजार आठसै चौंसठि क्रमते दुगुण बढै परितक्ष ॥ तेरह कोरि बयालिस लक्षो सत्रह सहस सातसै होय । छब्बिस अधिक जोरि सब भेदन ठीक दियो चाहै जो कोय ॥ १ ॥

दोहा ।

सबके कहत उदाहरण, बाढ़ै ग्रंथ अपार ॥
कहूं कहूं ताते कहत, वरण छन्द विस्तार ॥ २ ॥

लक्षण-दोहा ।

एक गुरू श्री छेन्द है, कामा द्वै गुरु बन्द । ध्वजा-एक महि नन्द यक, सारस पिय मधु छन्द ॥ तीनिवरण प्रस्तार जो, म य र स त ज भ न पाठ । आठौ गणते दास भनि, छन्द होत हैं आठ ॥ ३ ॥ ताली ससीप्रिया रमनि, अरु पंचाल नारिंद । आठ सहित मन्दर कमल, म य र स त ज भ न छन्द ॥ ४ ॥

चार वर्णके छन्द—सोरठा ।

तिर्ना क्रीडा नन्द, रामा धरा नगन्निका ॥
कला तरणिजा छंद, गनि गोपाल मुद्राहि पुनि ॥ ५ ॥

धारी वीरो कृष्ण, बुद्धी निशि हरि सोरहो ॥
भेद कहत कवि जिष्ण, चारि वरण प्रस्तारके ॥ ६ ॥

दोहा ।

मत्तपथारहुमें परैं, उदाहरण ये आइ ॥
तिर्ना क्रीडा नन्द अरु, धरा गोपालसे वाइ ॥ ७ ॥

तिर्ना छन्द ।

धर्मज्ञाता, निर्भयदाता । तृष्णाहिन्नो, जीवै तिन्नो ॥८॥

क्रीडा छन्द ।

हमारी सो,हरै पीडा । कलिंदी जो, करै क्रीडा ॥ ९ ॥

नन्द छन्द ।

यो न कीजै, जान दीजै । हो कन्हाई, नंद आई ॥१०॥

धरा छन्द ।

सो धन्य है, औ गन्य है।सीतावरै, जो ही धरै ॥११॥

दोहा ।

इकइस गण बाहुल्यते, छन्द होत बहु भांति ॥
दास दिखावै भिन्न करि, तेहि तरंगकी पांति ॥ १२ ॥

लक्षण ।

या रस तज भगननि दुनो भरु । छहोछन्दके नाम समुझि धरु॥'शंखनारि' 'जोहा''तिलका'करि।'मंथानो' 'मालती' 'दुमदरि' ॥ १३ ॥

शंखनारी छन्द ।

लखे शुभ्र ग्रीवा, महाशोभसीवा ।
परेवा कहारी, कहा शंखनारी ॥ १४ ॥

जोहा-छन्द ।

रूपको गर्व ह्वै, भूलती सर्ववै ॥
मुख्यनो साथमें, लाल जो हाथमें ॥ १५ ॥

तिलका-छन्द ।

अधिको मुख हो, किय क्यों शशिसो ॥
सजिकै सखियो, तिल काजरसों ॥ १६ ॥

मंथान-छन्द ।

गोविंदको ध्यानु, सारंस तू जानु ॥
विद्यामहीमानु, है ज्ञान मंथानु ॥ १७ ॥

मालती-छन्द ।

लखो बलिबाल, महा छबिजाल ॥
लसै उर लाल, सुमालतिमाल ॥ १८ ॥

दुमंदर-छन्द ।

बाल पयोधर, मो हिय सोहर ॥
मानुसुअंदर, मानु दुमन्दर ॥ १९ ॥

लक्षण-दोहा ।

तीनि नन्द ग'समानिका''चामर'सातअनूप।
पांच नन्दगो'सेनिका'भुजल सेनिकारूप॥२०॥

समानिका-छंद ।

देविद्वार जाहि तू । बो हि पा तू ॥
राखि है कृपानिकै । खासदासमानिकै ॥ २१ ॥

चामर-छंद ।

बालके सुदेश केश कालिंदीप्रभादली । पन्नगी कुमा-

रकी सेवारकी कहा चली ॥ या व्यथा फिरै निकुंज कुंज पुंज भ्रामरो। कामधेनु पायरो रहै अतेय चामरो॥२२॥

सेनिका-छंद ।

चली प्रसून लेन वृन्दबाल । सुमंजु गीत गावती रसाल ॥ विलोकिये प्रभा अनूप लाल । बनी मनोज्ञ सेनिका विशाल ॥ २३ ॥

लक्षण-दोहा ।

चारि 'मल्लिका' 'चंचला' आठ 'गन्द' दश नंद ॥
'प्रमाणिका' भुज चारिको आठे 'नराच' सुछन्द॥२४॥

मल्लिका-छंद ।

चित्त चोरि लेत पौन । मन्द मंद ठानि गौन ॥
मोहनी विचित्र पास । मल्लिका प्रसून बास ॥ २५ ॥

चंचला-छंद ।

श्याम श्याम मेघ ओघ व्योममें अलील सेन । ल्याइयो प्रसूनबाण कालकी अपार सैन ॥ होति आजु कालिहमें बियोगिनीन प्राणहानि। चंचला नचै न मीचु नाचती चहूं दिशानि ॥ २६ ॥

गंड तथा चित्र छंद ।

रामरोष जानि हार लाभ मानिशम्भुजोनचैडताल । पाइकै मृदंग शोर आवई कुमारको मयूर हाल ॥ होइ तो कुतूहलै विलोकि शुंडको चलैं डेराइ व्याल। चौंकि चिग्घरे गणेश गुंजि गंडते उडै मलिंदजाल ॥ २७ ॥

प्रमाणिका-यथा।

न है समै घटानिकी। सलाह मान ठानिकी॥
जताइ जाइ दामिनी। सुक्षिप्र मानि कामिनी॥ २८॥

नराच छन्द।

मृगाक्षि एक द्वारते सुभावही चितै गई। कह्यो न जाइ मोहिये अगाइ धाइकै गई॥ पर्च्यो प्रतीति आजु मोहिं दास बैन सांचु है। खरो नराचते तिया कटाक्षको नराचु है॥ २९॥

लक्षण।

'भुजंगप्रयात' 'लक्ष्मीधर' नाम। स'तोटक' 'सारँग' 'मोतियदाम'॥ स'मोदक' दास छ भेद विचारि। परो सत जो भन चौगुण धारि॥ ३०॥

भुजंगप्रयात।

छटे बार देखे धरे मोर पाखे। विना डीठिकी ह्वै गई वृन्द आखे॥ जिते सर्व शृंगार वेणीप्रभासों। भुजंगो प्रयातो त्रपा पाइ जासों॥ ३१॥

लक्ष्मीधर--यथा।

शंख चक्रो गदा पद्म जा हाथमें। पक्षिराजा चढ्यो वैष्णवो साथमें॥ दाससो देव ध्यावै सदा जीयमें। जो रहे चारु लक्ष्मी धरे हीयमें॥ ३२॥

तोटक छन्द।

घरही इनगैरबगारन दे। हरिरूप सुधा उर धारन दे॥

तलफै आँखिया कि टारन दे । अब तो टक लाइ निहारन दे ॥ ३३ ॥

सारंग छंद ।

कीजै कुहू जानि क्यों शशिको भंग ॥ बेगै चलोश्यामपै साजिया ढंग ॥ कस्तूरिही लेपकै लेहि सर्वंग । प्यारि सजै अजु सारी निसारंग ॥ ३४ ॥

मोतीदाम छन्द ।

तमालके ऊपर हैं बकपांति । कि नीलशिलापर संतजमाति ॥ नक्षत्रनि अंक लिये घनश्याम । कि श्याम हिये पर मोतियदाम ॥ ३५ ॥

मोदक छन्द ।

नारि उरोजवती निकुरो जनि । कान्ह उचाट भरे जिउरो जनि ॥ लीबे हैकूबरीको चरणोदक । कूबर जासु बसीकर मोदक ॥ ३६ ॥

लक्षण-दोहा ।

अन्त भुजंग प्रयातके लघु इक दीन्हे 'कन्द' ।
तीनि भगन द्वै गुरु दिये 'बन्धु''दोधको' छन्द ॥३७॥
मोदक शिरकै बंधु शिर द्वौ लघु 'तारक' बन्द ।
पंच सगन 'भ्रमरावली' छयगण 'क्रीडा' छन्द ॥ ३८॥
पंच भगन गुरु एकको छन्द कहावै 'नील' ।
तीनि सगन शिर करण है 'मोटनक' सुशील ॥ ३९ ॥

कंद छन्द ।

चहूं ओर फैलाइ है चंद्रिका चंद । खुलैगी सुगंधै

फुलैगी लता बृंद ॥ जगत्प्राण त्यों डोलिहैं मन्दही मंद । कभै चेतु ऐहै चिदानन्दको कन्द ॥ ४० ॥

बंधु छन्द ।

आरतते अति आरत है जू ॥ आरतवन्त पुकारत है जू ॥ दासहुको दुख दूरि बहायो ॥ तौ प्रभु आरतबंधु कहायो ॥ ४१ ॥

तारक छन्द ।

पर्य्यंक मयंकमुखी चलि ऐहै । सविलास विलोकि हिये लगि जैहै ॥ विरहागि भरो हियरो सियरै है । करतार कबै वह वासर ऐहै ॥ ४२ ॥

तजिकै दुख गंज हजारक जारक । कत सोवत भूमि भटारकटारक ॥ भजि ले प्रहलाद उबारक बारक । जगको निस्तारक तारक तारक ॥ ४३ ॥

भ्रमरावली छन्द ।

चलि बीस बिस्वे उहि आजुहि ल्यावत हौं । तुम्हरे हियकी सब ताप बुझावत हौं ॥ इन कीर चकोरन दूरि करौ बनते । भ्रमरावलि बेगि बिडारहु कुंजनते ॥ ४४ ॥

क्रीडा छन्द ।

दुहूं ओर बैठी सभा शुभ्र सोहै सुमानो किनारा।रही दूरिलौं फैलि है चांदनी चारु ज्यों गंगधारा ॥ सजे चूनरी नील नच्चंति चंद्राननी बारदारा। करै चन्द्र क्रीडा मनो संग लै शर्वरी सर्व तारा ॥ ४५ ॥

नील छन्द ।

मोहनआननकी मुसुकानि अनूपसुधा । होत विलोकि हजार मनोभवरूप मुधा॥पीत पटापर दास न्योछावरि बीजु छटा। नीलकलेवर ऊपर कोटिक नीलघटा ॥४६॥

मोटन छन्द ।

मोहै मनु बेणु बजाइ अली। मुसै उर अन्तर भांति भली ॥ कीजै किन व्योत अगोटनको । है चोर यही मन मोटनको ॥ ४७ ॥

दोहा ।

भुजँगप्रयातहि आदि दै, सब चौगुनो बनाउ ।
होत परम सुखदानिहै, भाषो भोगीराउ ॥ ४८ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे बेगनबाहुल्यके छंदोवर्णनं नाम दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

अथ वर्णसवैयाप्रकरण-दोहा ।

इकइसते छब्बीस लगि, बरण सवैया साजु ।
इक इक गण बाहुल्य करि, वरण्यो पन्नगराजु ॥ १ ॥

लक्षण ।

सात भ है 'मदिरा' गुरु अंतहु, दै लघु और 'चकोर' कहो गुनि ।ताहु गुरू करि 'मत्तगयंद' लहू मदिरा शिर 'मानिनि' ये सुनि ॥ आठ करो य 'भुजंग' र'लक्षिय'सो 'दुमिला' तहि 'आभार' है पुनि ।जाहि सुमोतियदाम बना वहु भागन आठ 'किरीट'रचो चुनि ॥ २ ॥

मदिराछन्द ।

दीन अधीन है पाँय परी हो अरी उपकारको धावहि तू । मेरी दया लखि होहि प्रसन्न दया उर अंतर ल्यावहि तू ॥ नैननके हियकी बिरहागिनि एकहि बार बुझावहि तू । श्रीमनमोहन रूप सुधा मदिरा मद मोहिं छकावहि तू ॥ ३ ॥

युक्ति दूसरी मदिराचकोर छन्द ।

सोहत है तुलसी बनमें रमि रास मनोहर नन्दकिशोर । चारिहू पास हैं गोपवधू मणिदास हियेमें हुलास न थोर ॥ कवल उरोजवतीनको आनन मोहन नैन भ्रमै जिमि भोर । मोहन आनन चन्द लखे बनितानके लोचन चारु चकोर ॥ ४ ॥

मत्तगयन्द छंद ।

सुंदरि शुभ्र सुवेष सुकेश सुश्रोणि सुठौनि सुदंत सुसैनी । तुंगतनी मृदु अंग कृशोदरी चंद्रमुखी मृगशावकनैनी ॥ सोनेकोबास रु दास मिले गुनगौरि प्रिया नवला सुखदैनी । पीन नितम्बवती करभोरुह मत्तगयन्दगती पिकबैनी ॥ ५ ॥

मानिनी--यथा ।

प्रफुल्लित दास बसंत किफौज शिलीमुखभीर देखावतिहै । जमाति प्रभंजनकी गहि पत्रनि मानविभंजनि धावतिहै ॥ नये दल देखि हथ्यारन डारि भटै तियसंगति

भावतिहै । चढाइके भौंह कमाननि मानिनि काहे तू वैर बढ़ावति है ॥ ६ ॥

भुजंग छंद ।

तुम्हैं देखिबेकी महाचाह बाढ़ी मिलापै बिचारे सराहैं स्मरै जू । रहै बैठि न्यारी घटा देखि कारी बिहारी बिहारी बिहारी ररै जू॥भई काल बौरी सिदौरी फिरै आजु बैठी दशा ईश काधों करै जू । बिथामें गसीसी भुजंगैं डसीसी छरीसी भरीसी घरीसी भरै जू ॥ ७ ॥

लक्षी छन्द ।

बाहिही आइके बीरमो ऐनमें बैनके घावकी वो करै थावरी । आपनी तत्त्व हो एकही वा कह्यो कौनकी वो करै बात फैलावरी ॥ दास हो कान्ह दासी बिना मोलकी छांडि दीन्ह्यो सबै वंश वंशावरी । ज्ञान शिक्षानि तासों जुदी रक्षिये लक्षिये जाहि प्रत्यक्षही बावरी ॥ ८ ॥

दुमिला छद ।

सखि तोमहँ याचन आई हौं मैं उपकारके मोहिं जिआवहि तू । तोहिं तातकी सौं निज भ्रातकि सौं यह बात न काहू जनावहि तू ॥ तुव चेरी हौं होउँगी दास सदा ठकुरायन मेरी कहावहि तू । करि फन्द कछू मोहिं या रजनी सजनी व्रजचन्द मिलावहि तू ॥ ९ ॥

आभार छंद ।

ये गेहके लोग धौं कार्तिकी न्हानको ठानि हैं कालिह एकेकही गौन । संवादके वादिही बावरी होयके आ-

जु आली रहौ ठानेही मौन ॥ हौं जानती हौं न धौं सीख कोने दयो नन्दको लाल गोपाल धौं कौन।आभार रह्यां द्वारको ताहिको सौंपिकै मोहिं औ तोहिं ह्यां राखते भौन ॥ १० ॥

मुक्तहरा छन्द।

पठावत धेनु दुहावन मोहिं न जाउँतौ देखि करौंतुम टेहु। छुटाइ भज्यो बछरा यह वैरी मह करि हौं गहि ल्याई हौं गेहु ॥ गई थकि दौरत दौरत दास खरोट लगे भइ विह्वल देहु। चुरी गइ चूरि भरी भइ धूरि परचो टुटि मुक्तहरा यह लेहु ॥ ११ ॥

किरीट छन्द।

पाँय न पीरिये पावरिया कटि केशरिया दुपटा छबि छाजित। गुंज मिले गजमोतिय हारमें रीति सितासित भांति है भाजित ॥ अंग अपार प्रभा अवलोकत होत हजार मनोभव लाजित। बाल यशोमति लाल यई जिनके शिर मोर किरीट विराजित ॥ १२ ॥

लक्षण-दोहा।

आठ सगन गुरु 'माधवी', सुपिय मालती चाहि ॥
सत्य नयों 'मंजरि'कहे, सत्य भरो अलसाहि ॥१३॥

माधवी—यथा।

बिन पंडित ग्रन्थ प्रकाश नहीं बिन ग्रन्थ न पावत खण्डित भा है। जग चन्द्र विना न विराजति यामिनि

यामिनिहू बिन चन्द्र अभा है ॥ सुसभाहिके देखे ते साधुता होति औ साधुहीते शुभ होति सभा है । छबिपावतहै मधुमाधवीते मधुको अतिमाधवीहूँसों प्रभा है १४॥

महिमा गुणवंतकी दास बढै बकसै जब रीझिके दान जवाहिर । गुणवंतहुते पुनि दानिहूंको यश फैलत जात दिगंतके बाहिर ॥ जिमि मालतीसों अतिनेह निबाहेते भौंर भयो रसिकाईमें जाहिर। अरु भौंरहुको अतिआदर कीन्हे सुवासमें मालति यों भइ माहिर ॥ १५ ॥

मंजरी–यथा ।

वसंतसे आज बने ब्रजराज सपल्लव लाल छरीबर हाथे ॥ सुकुण्डलके मुक्ता बिच है मकरन्दकि बूंदनकी छबि नाथे॥ मलिन्द बने कच घूंघरवारे प्रसून घने पहुंचीनमें गाथे । गरे जिमि किंशुक गुंजकी माल रसालकी मंजुल मंजिर माथे ॥ १६ ॥

अरसात छन्द ।

स्यात घरीहूँ नहीं बिलगात लजात औ बात गुने मुसुकात हैं । तेरी सौं खात हौं लोचन रात ह्वै सारस पातहूते सरसात हैं ॥ राधिका माधो उठे परभात हे नैन अघात हैं पेखि प्रभात हैं। लागि गरे अगिरात जँभात भरे रस गात खरे अरसात हैं ॥ १७ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे सवैयाप्रकरणवर्णनं नाम एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

अथ संस्कृतयोग्यपद्यवर्णन–दोहा।

कहों संसकृत योग्य लखि, पद्यरीति सुखकन्द ॥
गनलक्षण गननाममें, छन्दलक्षणें 'छन्द' ॥ १ ॥

रुक्मवती छन्द।

रग्गनो कर्नो सगनोगो। जानिये सो 'रुक्मवती' हो ॥
पायमें नौ अक्षर सोहै। तीनि औ छामें जति जोहै॥२॥

यथा।

लक्ष्मी कांपै नर रई है। राखते सो जात भई है ॥
सो रही ना एक रती जू। लंकही जो रुक्मवती जू॥३॥

शालिनी छन्द।

कर्नो कर्नो रग्गनो रग्गनोगो। जानोजाको छन्द है 'शालिनी' हो ॥ पाये पाये वर्ण एकादशो है। चारै सातै बीच विश्राम सोहै ॥ ४ ॥

यथा।

बाला वेणी अद्भुत व्यालिनी है।माधो नीके गर्वकी घालिनी है ॥ पीके जीमें प्रेमकी पालिनी है। सौते-केही सर्वदा सालिनी है ॥ ५ ॥

वातोर्मी छन्द।

गोगी कर्नो,सगनो जगनो,। 'वातोर्मी' है,यहई छन्द बनों ॥ सातें चोथे, जति है चारु यामें। पाये बर्नो, दश औ एक तामें ॥ ६ ॥

यथा।

कैसे याको, कहिये नेकुनाहीं। नीवीबांधी, रहती

याहि माहीं ॥ ताते ऐसो, वरणै बुद्धि मेरी। वातोर्मी है सजनी लंक तेरी ॥ ७ ॥

इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा छंद ।

तक्कार कर्नो सगनो यगंनो । है 'इन्द्रवज्रा' दश एक बंनो॥ 'उपेन्द्रवज्रा' जगनादि सोई । दुहू मिले पै 'उपजाति' होई ॥ ८ ॥

इंद्रवज्रा-यथा ।

एरी बड़ी जो गिरिते कहायो। सोचित्त पीकोइनसों गिरायो ॥ सो है अयानो मृदु जो कहै री । है इन्द्रवज्रा मुसुकानि तेरी ॥ ९ ॥

वार्तिक ।

'उपेन्द्रवज्रा' आदिको लघु पढे होत है ॥ १० ॥
'उपजाति' कोई तुक आदि लघु पढे होत है ॥ ११ ॥

उपस्थित छंद ।

कर्नो सगंनो पियगो पगंनो । सो 'पस्थितो' है दश एक बंनो ॥ जगन्तु सगनो तक्कारु करना । 'पयस्थित' कहै मन ह्वै प्रसन्ना ॥ १२ ॥

यथा ।

प्यारे प्रतिमान कहा करौं मैं। जो आपन आपनोई न रोमैं ॥ आली हठई बहुते कियेहू । कोप स्थितिही सुरे रहै न केहू ॥ १३ ॥

पैस्थित छंद ।

दुखो रु सुखको है दानि सोई। वहै हरत दूजो न कोई॥
न दास जीमें हूजे निरासी।जो पैस्थितहै वैकुंठवासी १४

नन्द करनो नन्दगो रगानोगो । नाम याको छन्द सालो कहो हो ॥ चारि सातै दास विश्राम ठानो । अख्यरा ये ग्यारहो जोरि आनो ॥ १५ ॥

यथा ।

कान्ह कीजो त्यों रती खीस होगी । मोहिं त्योहीं धन्य आली कहोगी॥शूर कैसे जोर जानै जियेमें । होइ जाके शेल साली हियेमें ॥ १६ ॥

सुन्दरी छंद ।

नगन भागनु भागनु रग्गना । चरण चारिहु सुंदरि शोभना ॥'द्रुतविलम्बित'याहि कोऊ कहै । वरण बारह दास अचूक है ॥ १७ ॥

यथा ।

अनमनी सजनी सब संगकी। सुधि न तोहिं रही कछु अंगकी ॥ दुखित मोहनलाल मुकुंद री। कुढग मानहि भानहि 'सुंदरी'॥ १८ ॥

प्रमिताक्षर ।

प्रिय नंदनंद सगनो सगनो।'प्रमिताक्षरा'हि पगनो पगनो॥जति बीच बीच भनिले भनिले । दश दोइ वर्ण गनिले गनिले ॥ १९ ॥

यथा ।

अँगिया सगाढ बलदे जियकी। अरु नीलअंचलहुसो

मढि ली ॥ तिन बीच व्यक्त झलकैं कुच यों । कविता-निबद्ध प्रमिताक्षर ज्यों ॥ २० ॥

वंशस्थविल छन्द ।

जगन्नु कर्ना सगनो लगोलगो । सुछन्द 'वंशस्थ' बिलोप गोपगो ॥ गोआदिको वर्णसु 'इन्द्रवंशु' है । मिलैं दुवापै 'उपजाति' अंशु है ॥ २१ ॥

यथा ।

सक्यो तपस्वी महिमें न होइ जू । न तो हमारे थलु लेइ सोइ जू ॥नटी न वंशस्थ विलोकि सोहनी । कृतेन्द्रवंशोपरि विश्वमोहनी ॥ २२ ॥

इन्द्रवंशा—यथा ।

जान्यो तपस्वी महिमें न होइ जू । न तो हमारो थलु लेइ सोइ जू ॥ नारी न वंशस्थ विलोकि सोहनी । की इन्द्रवंशोपरि विश्वमोहनी ॥ २३ ॥

विश्वादेवी छंद ।

गोगोमो रूपो गो यगानै यगानै॥ 'विश्वादेवी' के पायँमें चित्त आनै॥सोहै आयैं बारहो वर्ण जाके।वर्णों हैं पांचों सात विश्राम ताके ॥ २४ ॥

यथा ।

सेएँ गौरीके पायँमेंकी ललाई।योगीको होती योगरा गाधिकाई ॥ राजस्सो पावै शूर जे होत सेवी । सोहागै लेगी सेइकै विश्वदेवी ॥ २५ ॥

प्रभा छन्द।

दुजवर पिय रागिनी रागिनी। करत विमल चारु मंदाकिनी॥ बहुत कहत है एही है 'प्रभा'। दु दश वरण और धा है अभा॥ २६॥

यथा।

शिवशिरपर तो ढरी गंग री। तियकुच शिवपै त्रिवेणी ढरी॥ सुरसति यमुना मनी भामिनी। मुकुटगत प्रभासु मन्दाकिनी॥ २७॥

मणिमाला छन्द।

कर्ना पिय कर्ना कर्ना पिय कर्ना। आधे विश्रामो है बारह बर्ना॥ बीसै जहँ मत्ता सोहै अति आला। भोगीपति भाषो याको 'मणिमाला'॥ २८॥

यथा।

चन्द्रावलि गौरी पूजन लै जाती। कीजै कि न प्यारे सोरी अब छाती॥ राधा वह आवै एहो नँदलाला। जाके हिय सोहै नीकी मणिमाला॥ २९॥

पुट छन्द।

तिय दुजबर कर्नो नन्द कर्नो। जति बसु अरु चारे बीस बर्नो॥ दश अरु बिय यामें वर्ण राख्यो। अहिपति 'पुट' नामे छन्द भाख्यो॥ ३०॥

यथा।

नहिं ब्रजपति बातैं तू सुनावै। सखि मरत समयमें

मोहिं ज्यावै॥ अमिय स्रवत आली आस्य तेरो। श्रव-
णपुट न पीवै प्राण मेरो॥ ३१॥

ललिता छन्द।

तो अग्र गलै पिय नंद नंद गो। विश्राम लेत पग
पंच सत्तको॥ हे मुग्ध दौरु दश वर्ण देहि री। सानंद
जानि 'ललिताहि' ताहिरी॥ ३२॥

यथा।

वशी चौराइसु यकन्तमें गई। कान्है बताइ इनका-
नमें दई॥जैसी विचित्र वृषभानलाड़िली। तैसी प्रवीण
ललिता सखी मिली॥ ३३॥

हरिमुख छन्द।

दुज वर नन्द जगंनु नन्द कर्नो। 'हरिमुख' छन्द
भुजंगराज वर्नो॥ दश अरु तीनि वरंनु चोरु सोहै।
षट अरु सात विराम चित्त मोहै॥ ३४॥

यथा।

बंधहि न जे मृदु हास पास माहीं। बिंधत हिये दृग
बाण जासु नाहीं॥ धनि धनि ते पर्मदा सदा कहावै।
'हरिमुख' हेरि जु खेरि चेतु ल्यावै॥ ३५॥

प्रहर्षिणी।

मैं जानो दुजवर रग्गनो यहैजू। याहीको'प्रहर्षिणी'
सबै कहै जू॥ तीनै अरु विरति विचारि पांच पांचो
तीनै अरु दश अखरानि ठीक यांचो॥ ३६॥

यथा ।

पायो तू रिस कारि कौन सुक्ख राधे । बोरी बैरीसन कौन बैर साधे ॥ तेरी तनु अँखियन अश्रु वर्षिणी है । सौतिनकी जनिउ महाप्रहर्षिणी है ॥ ३७ ॥

तनुरुचिरा छन्द ।

लगे लगे दुजवर गैलगो । भले अली 'तनरुचिरा' ह्वै लगो ॥ त्रयोदश वर्णनिसो प्रभावनी । विराम है लखि नव चारिको धनी ॥ ३८ ॥

यथा ।

अनेक धामन थवारि डारिये । किती प्रभा मर्कतमें विचारिये ॥ कहा चलेज लधर ज्योतिमन्दकी । सकै जु ह्वै तनुरुचि रामचन्द्रकी ॥ ३९ ॥

क्षमा छन्द

नगन नगन कनौं जगन्तु गोगो । विरति वरण आठै सरै कहो हो ॥ त्रिदश वरण नीके करो जमा जू । भुजग नृपति याको कहै 'क्षमा' जू ॥ ४० ॥

यथा ।

निज वश वरनारि सतै जु पालै । भुवि तरुण धनी ह्वै भजै गोपालै ॥ तब धनि धनि जीमें कह्यो परैजू । जब समरथ ह्वैकै क्षमा करैजू ॥ ४१ ॥

मंजुभाषिणी ।

सगनो जगन्तु सगनो जगन्तु है।गसमेति तीन दशई

वरन्नु हैं ॥ षट सप्त बीच जति तिरी राखिनी । मृदु छन्द होत हैं 'मंजुभाषिणी' ॥ ४२ ॥

यथा ।

वह रैनिराजवदनी निहारिहौं । तब दास जन्म सुफली विचारिहौं ॥ अँखियाँ विशाल छबि कंजनाखिनी । बतियाँ रसाल मृदु मंजुभाषिनी ॥ ४३ ॥

मंदभाषिणी ।

ध्वजा ध्वजा नन्द सगनो लगे लगे । त्रयोदशै वरन्न धरिये पगे पगे ॥ छसातके बीच विराम राखिनी । फणी कह्यो छन्द सु 'मंदभाषिनी' ॥ ४४ ॥

यथा ।

सुनो करै कान्ह वर बीनवादको। कियो करै बाँसुरिहुके निनादको ॥ बिना सुने बैन तुअ कन्दनाखिनी । भली लगै कोकिलउ मन्दभाषिनी ॥ ४५ ॥

प्रभावती ।

तक्कारगो द्विजवर नन्दरागनो । तीनै दशै चरणनि अख्यरा भनो ॥ चारै छहै तिय विशराम भावती ।याको कह्यो अहिपति है 'प्रभावती' ॥ ४६ ॥

यथा ।

कै गोरसी वसन अरु देह सर्वको । कीबो करै दिन दिन ग्वारि गर्वको ॥ जोपै न तो तजि उन चित्त भावती । केती लखी शशिवदनी प्रभावती ॥ ४७ ॥

वसंततिलक ।

कनौं जगन्नु सगनो सगनो पगंनो । सोहै'वसंतति-
लका' दश चारि बंनो ॥ आठै छहै वरणमैं जति चारु
राख्यो । भाष्यो भुजंगपतिको यह दास भाख्यो॥४८॥

यथा ।

कारी पलास तरु डार सबै भई हैं। लालीतहांकछुक
किंशुककी ठई हैं॥कैला जग्यो मदनुपावकको विचारा ।
आयो वसंततिलकानन तो निहारो ॥ ४९ ॥

अपराजिता छन्द ।

नगन नगन नन्द नन्द धुजा धुजा। विरति सजति
चारु चारु दुजा दुजा ॥ चतुर्दशहि वर्णसों पगभ्राजिता।
भुजंगभणित छन्द है'अपराजिता'॥ ५० ॥

यथा ।

विनय सुनहि चण्डमुण्डविनाशिनी।जनदुःखहारि को-
टिचंदप्रकाशिनी ॥ शरण चरण है सदा सुखसाजिता ।
द्रवहि द्रवहि दासको अपराजिता ॥ ५१ ॥

मालिनी छंद ।

नगन नगन कनौं योग्य गंनो यगंनो।विरति रचिय
आठै और सातै वरंनो॥सुगन गुननि लेकै हारही डालि-
नी है । सरस सुरस बेली पालिनी 'मालिनी' है॥५२॥

यथा ।

रहति उर प्रभाते स्वर्णकी कांति फैली । विहँसत निज
आभा फेरि पावै चमेली ॥ सहजहि गुहि माला बालके
कंठ मेली।अद्भुत छबि छाकी मालिनीस्यो सहेली५३॥

चंद्रलेखा छंद ।

चारचो हारा धुजो कनों रग्गनो रग्गनाहै।गो संयुक्तो दशै पाचैं अख्यरा पग्गनो है ॥ चारैं चारै मिले सात तीनि विश्राम देखो । भोगी भाषै कहै दशो छन्द है चन्द्रलेखो ॥ ८४ ॥

यथा ।

राधा भूले न जानो यों है लवन्या न मेरी।जेहा तेहा तिहारीसी तौ प्रभा है घनेरी ॥ भौंहैं ऐसी कमाने है नैनसो कंज देखो । नासा ऐसो सुआतुण्डे आस्यसो चन्द्रलेखो ॥ ८५ ॥

प्रभद्रक छंद ।

दुजवर गैल गैल पिय नन्द नन्द है।गुरयुत आठ सात विश्राम बन्द हैं ॥ पन्द्रह बरंन पाय करते अनंद हैं । कहत 'प्रभद्रका'-ख्य अहिराज छन्द हैं ॥ ८६ ॥

यथा।

रिस करिलै सहाय करि दाप दांकई । तबहुं न काल-दण्ड प्रतिवार वांकई।।जिमिहिं सुभाय भाय प्रियरामभ-द्रको । दुख हरता दयाल करता प्रभद्रको ॥ ८७ ॥

चित्रा छंद ।

जोमैं दीजैआठो हारा गोयकरो यकारो।आठैसातै दै विश्रामो छन्द 'चित्रा' विचारो॥आठो दीहा माहीं जीहा आशुही दौरि जावे । भोगी भाषै योंही याके पाठकी रीति पावै ॥ ८८ ॥

यथा।

फूले फूले फूले वारी सेजमें जो विहारे। सीते धूपे डाभे काटेमें सु क्यों पाउं धारे॥ शोचै भाषै रोवै झंखे कौशल्या औ सुमित्रा। कैसे सैहै दुःखै सीता कोमलांगी विचित्रा॥ ५९॥

मदनललिता छन्द।

चारचो हारा नगन सगनो कर्नां नगनु है। अन्ते दीही दश रु रसई वर्नां पगनु है॥ चारेमें अरु छह रु छहमें विश्राम लहिये। भोगी भाषै 'मदनललिता' यो छन्द कहिये॥ ६०॥

यथा।

होने लागी गतिललित औ बातैं ललित हैं। हावो भावो ललित मिसरी मानो कलित हैं॥ कानो लागी ललित अतिही दोऊ दृग री। दीन्हो आली मदनललिता तो अंग सिगरी॥ ६१॥

प्रवरणललिता छंद।

यगंन्नी मौआनो नगन सगनो गोय गन्नो। दशै छाही जाके चरण प्रतिमें होइ वन्नो॥ छहै छाओ चारो वरणमहिया है विरामी। फणिन्दै भाष्यो है 'प्रवरणललिता' छन्द नामी॥ ६२॥

यथा।

तिहारे जो वासी मिलनहित है चित्तु साधा। कह्यो मेरो मानो चलो उतही बेगि राधा॥ जहां गाढ़ी कुंजै

तरणि तनयातीर राजैं । गई ह्यांहो देख्यो प्रवरललिता न्हान काजैं ॥ ६३ ॥

गरुडरुत छन्द ।

दुजवर रागना नगन रागनो रागनो । 'गरुडरुते' भनो वरण सोरहै पागनो ॥ विरति विचारिकै हृदय सात नव ठानिये । भुजगमहीपको हुक्म दास जो मानिये॥६४॥

यथा ।

वृक तकि छाग ज्यों भजत वृद्ध औ बालको । मृगपति देखि ज्यों भजत झुण्ड शुण्डालको ॥ हरहरके कहे भजत पापको व्यूह ज्यों । गरुडरुतै सुने,भजत व्यालको जूह ज्यों ॥ ६५ ॥

पृथ्वी छन्द ।

जगन्नु सगना ध्वजा नगन रागना दोइ जू । विराम वसु वर्णमें बहुरि नौहिमें होइ जू ॥ चरणप्रतिहि दास जू वरण सत्रहै ठीक है । अहीश खगनाथसो प्रगटि छन्द 'पृथ्वी' कहै ॥ ६६ ॥

यथा ।

समर्थ जन कैसेहूँ करत मन्द जो काज है । विशेषि त्यहि पालते गहँत छोड़ते लाज है॥लिये अजहुँ शंभुजू रहत कालकूटैं गरे । अजौं उरगनाथजू रहत शीश 'पृथ्वी' धरे ॥ ६७ ॥

मालाधर छन्द ।

नगनसगना ध्वजा नगन रग्गना अत्तरो।भुजंगपति

भाषियो प्रगट छन्द'मालाधरो' ॥ विरति वसु नो कहै सुकविराजके गोत जू। चरण गनि लीजिये वरण सत्रहै होत जू ॥ ६८ ॥

यथा ।

युवती गिरिराज लषनको गई दूलहै । विकल डरिकै भजी निरखि शंभुको शूल है॥उरग तन भूषणो वदन आकपनैं भरे । वसन गजपालको मनुजमुण्डमाला धरे ॥ ६९ ॥

शिखरिणी छन्द ।

यगन्नो मोआनो नगन सगनो नन्दसगनो।कहै भोगी राजा वरण दश औ सत्त पगनो॥छविश्रामो पाये बहुरि छह कौ पंच कारिणी।गनो चारिउ पायें तब कह हु जू है 'शिखारिणी' ॥ ७० ॥

यथा ।

मृगेंद्रै जीत्यो है कटिहि अरु नैनानि हारिणी।सुवेणीही व्यालै रुचिर गतिही मत्तकारिणी॥मिलौ माधौजूसों सुचित सजनी ह्वै निडरणी । हरायेइ तेरे बसत सिगरे या शिखारिणी ॥ ७१ ॥

मंदाक्रांता छन्द ।

चारचोहारानगनसगनो रग्गनारग्गनंगा । 'मंदाक्रांता' भुजगभनिता सत्रहै वर्ण संगा ॥ कीजै चौथे विरति छठये फेरिकै सातयोंमें । आकनीं हैं सतकविन्हसों दाम जू बात योंमें ॥ ७२ ॥

यथा ।

को माघोनी नलघरणिको को कहा कामनारी।केती रंभा विमल छबि है का तिलोत्मा बिचारी॥ राधाजूके सरिस कहिये क्यों नरी जोषिता को।मन्दाक्रांता करेउ जिन है उर्वशी मेनका को ॥ ७३ ॥

हरिणी छन्द ।

नगन सगनो कर्नो तक्कार भागनुरा धरो । विरति वसुमें नोमें संभारिकै करबो करो॥ वरण दश औसातो पायन्न में चित दै सुनो। फणिपति भन्यो या छन्दाको गुनी 'हारिणी' गुनो ॥ ७४ ॥

यथा ।

लजित करता जेहैं अंभोज खंजन मीनके । बसत निज जे हींमें गोपाललाल प्रवीनके॥ फिरत वनमें वैतो पाले परे पशुहीनके । त्रियदृगनसे कैसे नैना कहो हरिणीनके ॥ ७५ ॥

द्रोहारिणी छन्द ।

चारचो हारा नगर सगना तक्कार कर्ना लगे।भोगी राजा भणित दश औ है सात वर्ना पगे ॥ विश्रामोंके दिशि मुनिन्हको आनन्द वो हारिणी।दासो भाषै सुनहु सुकवि यो है छन्द 'द्रोहारिणी' ॥ ७६ ॥

यथा ।

मेघादेवी सुचित करनी आनन्दे विस्तारिणी।प्राय-श्चित्तो बहु जमनको दंडाधर्में टारिणी॥दोषै खंडी दुरित

हरणी संतापसंहारणी । राधा माधो चरित चरचा संद्रोहद्रोहारिणी ॥ ७७ ॥

भाराक्रांता छंद ।

चारचो हारा नगन सगनो जगन्नु जगन्नु गो।भोगी भाषे विरति दश औ ति चारि पगन्नु जो ॥ चारचो पाये गनि गनि धरियै वरण सु सत्र है।'भाराक्रांता'कहत जगमें जु जत्र सु तत्र है ॥ ७८ ॥

यथा ।

नीकी लागै सरस कविता अलंकृत सूनियों । क्रीड़ामें ज्यों सुखद वनिता सुवस्त्र बिहूनियों ॥ नाहीं भावै अरस कबहूँ सुधीनि एकोघरी । भाराक्रांता अभ रननि ज्यों विभूषित पूतरी ॥ ७९ ॥

कुसुमितलतावेल्लिता छंद ।

के पांचो हारा मगन सगनो रग्गना गोय दीजे । विश्रामो पांचै बहुरि छहमें सातमें फेरि कीजै ॥ पायं पायंमें समुझि धरिये वर्ण अट्ठारहैजू । भोगीन्द्रै-भाष्यो 'कुसुमितलता वेल्लिता' छन्द है जू ॥ ८० ॥

यथा ।

बंधूको बिंबो कमल तिल जू पाटला औ चँबेली । चंपा कश्मीरो धरिहि बिच ह्यां फूलि है एक बेली ॥ दीजै आयेको सुख हगनको कुंजके हो बिहारी । बैठो ह्यां देखो कुसुमितलता वेल्लिता फूलवारी ॥ ८१ ॥

नन्दन-छन्द ।

दुजबर रग्गनो नगर रग्गनो धुजा रागनो । जति मुनिमें भनो छहहूमें ठनो रूपा चैतनो ॥ अहिपति यों कहै चरणपा लहै सुअट्ठारहै है । सब दुखकन्दने सुकविनन्दने रच्यो ज्यों चहै ॥ ८२ ॥

यथा ।

मनु मुनि सों कह्यो चहत जो दरचो बिथाके गनै । तजि सब आसरै जगतको करै एही तू धनै ॥ भवभ्रमको हनै भगतिसों सनै तनै औ मनै । यशुमति'नन्दने' गरुडस्यन्दने करहि वंदने ॥ ८३ ॥

नाराच छन्द ।

नगन नगन रग्गनो अग्गहू तीनि है रग्गनो। विरति लवहिमें करो वर्ण अट्ठारहै पग्गनो॥ भणित भुजँगराजको दास भाषै सुतो सांच है। मदनविशिख पांचहै षष्ठमों छन्द 'नाराच' है ॥ ८४ ॥

यथा ।

परम सुभट हो गन्यो भावती तोहिसो हारियो। निपट विवशहू गयो हाल बंदी दयो डारियो ॥ कबहुं डरत नाहिं जे तेगसों तोपसों कोटसों । करत बिकल ताहि तू नैन नाराचकी चोटसों ॥ ८५ ॥

चित्रलेखा छन्द ।

चारयो हारै नगन नगन गोयगन्नाय धारो। विश्रामो

है चतुर बरण औ सात सातैं बिचारो ॥ पायमाहीं गनि गनि धरिये वर्ण अट्ठारहै जू । जीमें आनौ भुजगनृपति यों 'चित्रलेखा' कहै जू ॥ ८६ ॥

यथा ।

इच्छाचारी सघन सदन कीयो बनाढ्या अरोगा । भर्त्ताहीना परमछबिवती धर्तु नारी सँयोगा ॥ भोगी दाता तरुणजननके पासमें बाल देखो । ता नारीसों कुल धरमको राखिबो चित्रलेखो ॥ ८७ ॥

सार्द्धललिता छन्द ।

मोआनो सगनो जगन्नुसगनो तक्कारसगनो॥विश्रामो गनि बारहै वरणको फेरि छगनो ॥ है अट्ठारहै बरण-दास लखिये चौंपाय बलिता । याको नाम धरचो भुज-गपतिही है 'सार्द्धललिता' ॥ ८८ ॥

यथा ।

सालस्या नैना उठी पलंगते पांलागिराबसों । हीमे-तेन चली चली सदनको ऐंडाइ छबिसों ॥ सौहेते सिगरे सुभांति बिगरे शृङ्गारबलिता । वक्त्रांभोजप्रफुल्ल 'सार्द्धललिता' बेनी विगलिता ॥ ८९ ॥

सुधाबुन्द छन्द ।

लगो चारो हारा नगन सगनो तक्कार सगनो । छ विश्रामै ठानो छ पुनि गनिकै तो फेरि छगनो ॥ दशै आठै बर्ना सुकविजनको दातार सिधिको । 'सुधाबुन्दो' छन्दै भुजग वर्णो है याहि विधिको ॥ ९० ॥

यथा ।

चलैं धीरे धीरे गति हरति है माते द्विरदकी । उनीदे नैनासों हरति अरुणता कोकनदकी ॥ किनारी मुक्तासो छवि वदनकी या भांति छलकै । सुधाबुन्दै मानो उफि-निशशिकै चौफेरि झलकै ॥ ९१ ॥

शार्दूलविक्रीडित छन्द ।

मोआनी सगनो जगन्नु सगनो कर्नौ यगन्नो धुनो । हेरो बारह सातमें चहत हौ विश्रामकोसो धुजो ॥ देखे जासु रसाल चाल पदकी पक्षी रहैं क्रीडिते । बर्नौ है उन ईस इश सुनिये 'शार्दूलविक्रीडिते' ॥ ९२ ॥

यथा ।

राजै कुंडल लोल कान शशिकी सो है ललाटी कला। आछे अंगनि पीतवास विलसै त्यों आँगुलीमें छला ॥ तीखे अस्त्र अनेक हाथ गिरिशा लीन्हे महाईडिते । आवै भांति भली बढावति चली शार्दूलविक्रीडिते ॥ ९३ ॥

फुल्लदाम छन्द ।

है पांचो हारा नगन नगन गोरग्गन्नगोय जामे।पाये-में बर्नौ दश अरुणवशो जानिये 'फुल्लदामे' ॥ विश्रामो पाँचो पुनि मुनि महिआ सातमें फेरि दीजै । फैलायो याको भुजगनृपतिही दासजू जानि लीजै ॥ ९४ ॥

यथा ।

ब्रह्माशंभुस्यो सुरमुनि सिगरे ध्यावते जासु नामैं । जाके जोरेको सुनिय न कतहूं बीर दूजो धरामैं ॥

ताहीको गोपी विवश करति है नैनआरक्ततामैं । टेढी भौंहैं बियकर गहिकै मारती फुल्लदामैं ॥ ९५ ॥

मेघविस्फूर्जित छन्द ।

यगन्नो मोआनो नसन गगनो रग्गनो रग्गनोगो।जहाँ पाये पाये वरण सिगरो वोनईसै गनोहो ॥ छ विश्रामो लैकै बहुरि छह औ सातसों पूजितो है। यही छन्दो भाष्यो भुजगपतिको 'मेघविस्फूर्जितो' है ॥ ९६ ॥

यथा ।

थक्यो है बासंती पवन बहि औ कोकिला कूकि हारी। निशानाथो हार्‌यो हनन हितुके चन्द्रिका तीक्ष्ण भारी ॥ न आवेगो प्यारो करति सखि तू वादि सन्देह बौरी।सहैगो नीकोही कठिन हियरा मेघविस्फूर्जितो री ॥ ९७ ॥

छाया छन्द ।

यगन्ना मोआनो नगन सगनो कर्नो लगै गोलगै । विरामै दै छामै बहुरि छह औ सातैं सु नीको लगै ॥ गनौ यामें बर्ना दश अरु नवईं पाये पये वन्दु है । फणीराजा वाणी चितु धरहि तो 'छाया' यही छन्द है ॥ ९८ ॥

यथा ।

लियो हाथे वंशी बसन पहिर्‌यो गोपालको आपुही । न जाने क्यों पायो बरण बहईकै शीश ज्यों जापुही॥हँसै बोलै मानो करति अबहीं क्रीडाहि विस्तारसी । यकांतामें कांता लखति निज यों छाया लिये आरसी॥९९॥

सुरस छन्द ।

चारचो हारा यगन्ना नगन नगन नन्द सगनो। सातो विश्राम कै कै पुनि करि मुनि औ पंच पगनो ॥ ठानी जयदास आछो दश नव वरणो एक चरणो। भाषै श्रीनागराजा इहि विधि 'सुरसा' छंद तरणो ॥ १०० ॥

यथा ।

यानै दासै अकेलै पवनतनयके नाम फलको। नींद जाके भरोसै कलिकमलको दुक्ख दलको ॥ फालै जानै पयोदै किहि न कि जिहिको गाइ सुरसा। जानै बुध्यो बडाई विनय लघुतई एक सुरसा ॥ १०१ ॥

सुधा छन्द ।

यगन्ना मोआनो नगन नगन गोगीयगानो। छ विश्रामै ठानो मुनि पुनि करिकै सातई फेरि तानो ॥ गनो पाये पाये गुर लघु मिलिकै वर्ण हैं दास बीसै। 'सुधा' याको नामै मधुर समुझिकै आपु राख्यो अहीसै ॥ १०२ ॥

यथा ।

वसै शंभूमाथे विमल शशिकलापे लिहयांते कढी है। नेरेहू प्राणीको अमर करति है सांचु याते बढी है ॥ कहै याको पानी गुन गनत न को हास जान्यो न जाको। अवै सीरो सोतो सुरसरि महिआँ स्वच्छ साचो सुधाको ॥ १०३ ॥

सर्ववदना छन्द ।

कनौं कनौं यग्गनो द्विजवरसगनो। ठानो बिश्राम

सातो पुनि मुनि रसहै विश्राम पगनो ॥ बर्ना बीसैसँवारो चरण चरणमें आनंद सदनै । भोगीराजा बखान्यो सकल वदनसी है 'सर्ववदनै' ॥ १०४ ॥

यथा ।

पूजा कीजै यशोदा हरि हलधरको मोसो सुनति हो। बाँधों मारो वृथाही इनको अपनो जायो गुनति हो ॥ पालै मारै उपजावै सकल जगत् यहैहै दैत्यकदनै । थाके जाके बखानै करत सरस्वती स्यो सर्व वदनै ॥ १०५ ॥

स्रग्धरा छन्द ।

चारचो हारा यगन्ना दुजवर सगनो रग्गना है विराजै । दीजै ता अंत हारो मुनि मुनि मुनिमें तीनि विश्राम साजै ॥ दीन्हे बर्ना इकीसै चरण चरणमें भाँतिको वृन्द भाजै । भाष्यो भोगीशजूको सकल छबि भयो 'स्रग्धरा' छंद छाजै ॥ १०६ ॥

यथा ।

मूसो सिंहो मयूरो डमरु वृषभ औ व्याल हैं संग-माहीं । ताके है एक एकै असन करनको पावते घात नाहीं ॥ जागे है मै विचारचो कुशल रहति है शंभुजूके घरैमें । माथे पीयूषधारी शुभ शिरनिको स्रग्धरे हैं गरैमें ॥ १०७ ॥

सरसी छन्द ।

नगन जगन्नु नन्द सगनो सगनो सगनो लगे लगो। बिरति विवेक एक दशमें करिये पगे पगे॥ बरण इकीस

दास दरसी दरसी दरसीरसी रसी । तिरति सुबुद्धि छन्द 'सरसी' सरसी सरसी रसी रसी ॥ १०८ ॥

यथा ।

भँवर सुनाभि कोक कुच है त्रिवली विमली तरंग है । द्विभुजमृणालजानि करकौकमलै कहिये सुरंगहै ॥ लहत कपोल कंबु सारिको अँखियाँ झखियाँ अनूपहै । चिकुर सेवार रूप जलजू वनिता सरसीसरूपहै ॥ १०९ ॥

भद्रक छन्द ।

गोसगनो जगन्नु सगनो जगन्नुसगनो जगन्नु सगनो । चारिनि दै विराम छगनो बहोरि छगनो बहोरि छगनो ॥ बाइसही विचारि मनमें चहूं चरणमें धरयो बरनमें । 'भद्रक' है रसाकरनमें गुना गरनमें सुन्यो करनमें ११० ॥

यथा ।

कीजिये जु गोपाल अरचा गोपाल चरचा सदाहि सुनिये । मेटनको महाकलुषको दारिद्र दुखको न और गुनिये ॥ जाहिर है सुरासुरनि लहू गुरनिमें चराचरनमें । भद्रक है यही अरनमें यही टरनमें यही परनमें ॥ १११ ॥

आद्रितनया छन्द ।

पिय सगनो जगन्नु सगनो जगन्नु सगनो जगन्नु सगनो । जति सर दै बहोरि छगनो बहोरि छगनो बहोरि छगनो ॥ गनि गनिकै त्रिवीस मनमें चहूँ चरणमें धरयो वरणमें ॥ गुनि गुनिकै जु 'आद्रितनया' सुअक्षरनमें कह्यो शरणमें ॥ ११२ ॥

यथा ।

घट घटमें तुही बसति है तुही बसति है स्वरूपमतिके । तुअ महिमा अरी रहति है सदा हृदयमें त्रिलोकपतिके ॥ निज जनको विना भजनहू कलेश हननी विथा निहनिनी । जय जय श्रीहिमाद्रितनया महेशघरनी गणेशजननी ॥ ११३ ॥

भुजंगाविजृम्भित छन्द ।

चारो हारा चारो हारा दुजवर दुज सगनो जगन्नु जगन्नु हो । आठैमै ले तो विश्रामै पुनि बिरमत एकदशमें करो पुनि सात हो ॥ पायेमें छब्बीसै वर्ना वरणित भुजगनृपतिको सुखाकर है कितो । याके नामे जानो चाहो चितु दै सुनो वचन तो 'भुजंगविजृम्भितो' ॥ ११४ ॥

यथा ।

साधूमें साधत्वैपै रावहु विधि विनय करत हूं निरादर कीनेहूं । जैसे धेनु दुग्धै देती कटु तिन अमित चरतहूं गुडादिक दीने हूं ॥ मंदेसो मन्दी ये होती जब तब जगत बिदित है उपाय करो कितो । जैसे मिस्री छीरै प्याये बिसमय स्वसन वहत है भुजंगविजृंभितो ११५॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे वर्णवृत्तश्लोकरीतिवर्णनं नाम द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

अथ अर्द्धसमवृत्ति-दोहा ।

पहिलो तीजो समचरण, दूजो चौथ समान ॥

करो अर्द्धसम छन्दमें, इहि विधि वृत्ति सुजान ॥ १ ॥

पुहपतिअग्र छन्द ।

दुजवर रागनो यगन्नो । दुजवर नन्द जगन्नु गोयगन्नो ॥ 'पुहपतिअग्र' छन्द बनों । विषम दशै त्रिदशैसमेति वर्नो ॥ २ ॥

यथा ।

फिरि फिरि भूमिके कहै नवेली । विधि यह कौन प्रकारकी चमेली ॥ रंग धरति कनैल पाखुरीके । छुवति जिपुष्प तिअग्ग आँगुरीके ॥ ३ ॥

उपचित्रक छन्द ।

सगना सगना सगना लगो । भागनु भागनु भागनु कर्नो ॥ अखरा चहु पायनि ग्यारहहै । छन्द यही 'उपचित्रक' वर्नो ॥ ४ ॥

यथा ।

न उठै कर जासु सलाम सो बात कहै मिल उत्तर नाहीं ।
न करो दुख मानव जानिकै मित्र सु है उपचित्रकमाहीं ५ ॥

वेगवती छन्द ।

सगनो सगनो लयगन्नो । भागनु भागनु भागनु कर्नो ॥
विषमें दश वर्ण प्रपन्नो । 'वेगवती' सम ग्यारह वर्नो ॥ ६ ॥

यथा ।

मिटिगो अधरा रंगु क्यों है । बाढि गई बकवाद घरी है ॥
सिगरो तन स्वेद सनो है । तो डर आवत 'वेगवती' है ॥ ७ ॥

हरिणप्लुत छन्द ।

विषमैं अखरा इकहीन है। सुनि सु सुन्दरि पायनि लीनहै॥ भनि पन्नगराज प्रवीनहै। 'हरिणप्लुत' सुछंद नवीन है॥ ८॥

यथा ।

वनकी वनिता लखि पाइहै। इकहिकी इकईस लगाइ है॥ मत रोकनिकी सजि बानिको। हरि न लुप्त करो कुलकानिको॥ ९॥

अपरचक्र छन्दः ।

दुजवरसगना जगन्नुगो। दुजवर गो सगना जगन्नुगो॥ शिव रवि अखरानि राखियो। सु 'अपरचक्र' भुजंग भाषियो॥ १०॥

यथा ।

व्रजपति इक चक्रको धरयो। त्रिभुवनको निज हाथमैं करयो॥ तुअ बश शुभ यों विशेषिकै। तिय बिय चक्र-नितम्ब देखिकै॥ ११॥

सुन्दर छन्द ।

सगना सगना जनन्नुगो। सगना भागनु रग्गना लगो॥ विषमैं अखेरा दशै धरो। समपद ग्यारह छंद 'सुंदरो'॥ १२॥

यथा ।

पढिकै दृढ मोहहनमंत्रको। सजनी सोधि शिंगार-तंत्रको॥ रचना विधना अनंगकी। सुखमा सुन्दर श्याम अंगकी॥ १३॥

द्रुतमध्यक छन्द ।

भागनु तीनि गुरू बिय दीजै । पुनि दुज भागनु गोलय कीजै ॥ ग्यारह बारह आखर पाये । कहि 'द्रुत-मध्यक' छन्द सुभाये ॥ १४ ॥

यथा ।

कौतुक आजु कियो वनमाली । जलबिच कूदि परेउ सुनि आली । नाथि फनिन्दहि तोषि फनिन्दी । प्रगट भयो द्रुत मध्य कलिंदी ॥ १५ ॥

दुमिलामुख-मदिरामुख-दोहा ।

सम मदिरा दुमिला विषम, दुमिलामुख पहिंचानि ।
उलटि सुमदिरा मुख कहैं, इहि विधि औरो जानि ॥ १६ ॥
होहि विषम चारों चरण, विषम वृत्ति है सोइ ।
वेदनि बीच प्रमाण नहिं, भाषा वरणै कोइ ॥ १७ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे अर्धसमविषमछन्दोवर्णनं नाम त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

अथ मुक्तकछन्दवर्णन–दोहा ।

अक्षरकी गणिती यहा, कहुं कहुं गुरु लघु नेम ॥
वरणबन्दमें ताहि कवि, मुक्तक कहैं सप्रेम ॥ १ ॥

श्लोक तथा अनुष्टुप्–छंद ।

चारि आगे धुजा एकै दूसरे द्वै धुजा थपो ॥
आठै आठ चहूँ पाये 'श्लोक' नाम 'अनुष्टुपो' ॥ २ ॥

यथा।

जन दीन दुखी करता, हरता भयभीरको।
लोक तीनिहुंमें फैल्यो, श्लोक श्रीरघुवीरको ॥ ३ ॥

गंधा छन्द--दोहा।

प्रथम चरण सत्रह वरण, दुतिय अठारह आनु।
योहीं तीजो चौथऊ'गंधा' छंद बखानु ॥ ४ ॥

यथा।

सुन्दरि तू क्यों पहिरति नग भूषण आसावली ॥
तन द्युति तेरी सहजही मसाल प्रभावली ॥ ५ ॥
चौवा चन्दन चन्द्रके चाहै कहा लडावली ॥
तेरे बात कहतको सकलों फैलै सु गंधा-वली ॥ ६ ॥

घनाक्षरी छंद--दोहा।

बसु बसु बसु मुनि जति वरण, 'घनाक्षरी' यकतीस ॥
चौं वसु 'रूपघनाक्षरी', बत्तिस गन्यो फणीस ॥ ७ ॥

यथा।

जबहींते दास मेरी नजरि परी है वह तबहींते देखिबे कीभूख सरसति है। होन लग्यो बाहरे कलेशको कलाप उर अंतरकी ताप छिन छिनहीं नसति है॥ चलदलपातसे उदरपर राजी रोमराजीकी बनक मेरे मनमें बसति है। शृंगारमें स्याहीसों लिखी हैं नीकी भांति काहू मनोयंत्र पांति घनअक्षरी लसति है ॥ ८ ॥

रूपघनाक्षरी छंद ।

दरशि परशि वह तापको हरत वह प्रमदा प्रवीणनिको मोहित करत प्रान । वह बरसावै हिय प्रेमरसबूंदनिको वह मनु बेझो बेधे चूकत न जग जान॥ चारु चारु विधिको विलोकि गुन चारिहूमें तब दास प्यारमें विचारे चारे उपमान । वदन सुधाधर अधर बिंब मेरी आली स्वच्छ तन रूप 'घनअक्षरी' प्रबल बान ॥ ९ ॥

बरणझुल्लनो छंद-दोहा ।

कहूं सगन कहुं जगन है, चौबिस बरण प्रमान ।
गुरु द्वै राखि तुकंतमें, 'बरणझुल्लना' ठान ॥ १० ॥

यथा ।

अरी पानि पीवै नहीं पान छीवै नहीं बास अरु बसन राखै न नेरो । भए प्राणके ऐनमें नैनमें बैनमें है नगुण रूप अरु नाम तेरो ॥ बिरहबश ऐसेही है वहोंके मही राखि है कै नहीं प्राण मेरो । नित दासजु याहिसन्देहके झुल्लना झुलती चित्त गोपालकेरो ॥ ११ ॥

इति श्रीदासकृत छंदोर्णवे मुक्तकच्छदोवर्णनं नाम चतुर्दशस्तरंगः॥ १४॥

अथ दण्डकभेद-दोहा ।

द्वै न सात यग्गन रचित, दण्डक चरणनि देखि ॥
चरण चरण नव सगन मय, कुसुमस्तबक विशेषि॥ १॥

प्रचित दण्डक ।

जयति जैसुखदानी अविद्यानिदानीसुविद्यानिधानी रवै वेदवानी । शरण तुव शरण बानी महेन्द्री मृडानी

दयाशीलसानी तिहूं लोकरानी ॥ धनि जगत त्यहिं बखानी वहैं भाग्यवानी वही संत जानी वही बीरज्ञानी। 'प्रचित' कहत जु प्रानी नमस्ते भवानी नमस्ते भवानी नमस्ते भवानी ॥ २ ॥

कुसुमस्तब कदण्डक ।

सखि शोभित श्रीनँदलाल भये निकसे बनते बनितागन संग जबै । हरि साथउरोजवतीनिके हाथनि याहि प्रभाहि धरे गुलदस्त फबै ॥ हरिजूके हराइवेको बहु तार तलास करो अनुमानिकै दास अबै । चित पायते ले ले मिली है मनो 'कुमुमस्तबक'कै कुसुममयूखकी सैनसबै ३

अनंगशेखरदण्डक-दोहा ।

च्यारि दशै के पंद्रहै, कै सोरह धुज पाइ ।
लखि 'अनंगशेखर' कहो, दण्डक भोगीराइ ॥ ४ ॥

यथा ।

विलोकि राजभवनके बनाउको विधातऊ भ्रमै न दासचित्त धीर कैतेहू धरे रहैं । तहां घरी घरी गोपालवृंद वृन्द सुंदरीन जाइ जाइ संग लै तमालसे अरे रहैं॥परै विचित्र छाहै वै जहां छजे जराउसे समूह आरसीनिके देवालमें जरे रहैं । प्रभा निहारि कान्हकी छके सकैन छांडि संगसे नस्यो चहूं दिशा अनंगशेखरे रहैं ॥ ५ ॥

अशोकपुष्पमंजरी छन्द-दोहा ।

यामें पंद्रह वर्ण हैं,अंत गुरूसों काम ॥
ता दण्डकहि 'अशोक', युत 'पुष्पमंजरी' नाम ॥ ६ ॥

यथा ।

ऊभि ऊभि श्वास लेत घोस टरउ कहूं टरै न कालरातिसी कराल आई शर्वरी । दास ईश बोस तत्त तेलसी लगै शरीर सर्पश्वाससी लगै बयारी यों घरी घरी ॥ रावरे वियोग रामसुक्खदानिवस्तु सर्व दुःखदानि सीयकोपकूं कुही दईकरी । भानुसो हिमांशुसोकृशानुसो सरो पुंज शोक भूरिको भरै अशोकपुष्पमंजरी ॥७॥

त्रिभङ्ग दण्डकं–दोहा ।

पंच विप्र भागनु दुगु, रस दो नन्द गोठाउं ॥
चरण चरण चौतिस बरण, बरण 'त्रिभंगी' गाउं॥८॥

यथा ।

सजल जलद जनु लसत विमल तनु श्रमकन त्यों झलको हैं उमा गोहै बुंद मनोहैं । भुवयुगमटकनिफिरि-फिरि लटकनि अनमिख नयननि जोहै हर्षों है है मन मोहैं ॥ पगि २ पुनि २ खिन खिन सुनि सुनि मृदु मृदु-ताल मृंदगी मुरचंगी झांझ उपंगी।बरहिबरह धरि अमित कलनि करि नचत अहीरन संगी बहुरंगी लालत्रिभंगी,९

मत्तमातङ्गलीलाकर दण्डक-दोहा ।

पाय करो नौ रगनते, चौदहलों चित चाहि ॥
नाम 'मत्तमातंगको', लीलाकर कहि ताहि ॥ १० ॥

यथा ।

पाइ विद्यानिको वृन्द जू भारती ल्याइ सानन्दजू मानु-

षीकृत्तिसो वृन्दजू छंद लीला करै तौ कहा । ह्वै महीपालको मोर आखेटमें साँझ है भोरलो लीन करसीनकी दौर पक्षी लजीला करै तौ कहा ॥ शुभ्र शोभा सबै अंगमें सुंदरी सर्वदा संगमें लीन ह्वै राग औ रंगमें नृत्यकीला करै तौ कहा । जो नहीं ठानिकै तत्तु भौ रामलीलाहिसो रत्त तो बाहरेसै करै मत्तमातंगलीला करै तौ कहा ११॥

अथ दण्डकभेद कुण्डलिया ।

दोइ नगन करि सातईं रगन देहु प्रति पाइ । 'चण्डवृष्टिप्रयात' यों दण्डक रचो बनाइ ॥ दण्डक रचो बनाइ, आठरग्गनको अर्नो । नौ अर्नो दश व्याल रुद्र जीमूतहि वर्नो ॥ लीलाकर बारह उद्दाम तेरहै कहो इन । दास चतुर्दश शंख सबनि शिर चाहिय दोइन ॥ एकै कबित बनाइकै गण गण पर तुक ल्याइ ॥ दास कहै यों आठऊ उदाहरण दरशाइ ॥ १२ ॥

यथा ।

शरण शरणही सदा ताहि कीनो कृपासिंधु गोपाल गोविन्द दामोदरो विष्णुजू माधवो श्यामजू औ स्वभू सुक्खदासनु है दासको । सदय हृदय ह्वै हमैं पालिहै आपनो जानिकै सोइ विश्वेश विश्वंभरो विष्णुजू राघवो रामजू औ प्रभू दुक्खहा हर्नु है त्रासको ॥ सुयश विदित जासु संसारके बीचमें सर्वदा ईश है देव देवेशको धर्म है पालिबो ज्याइबो मारिबो जो गनो है चहूँ वेदमें ।

भजन कारिय चित्तमें ताहिको नित्यही दानि है सिद्धिको लोकलोकेशको कर्म है घालिबो ज्याइबो तारियो सो भनो क्यों लहो भेदमें ॥ १३ ॥

दोहा ।

छंदनि दोहरो चौहरो, करि निजबुद्धि विवेक । मनरोचक तुक आनिकै, दण्डक रचो अनेक ॥ रागनके वश कीजिये, ताहि प्रबंध बखानि। छंद लिये सो पद्य है गद्य छंद बिन जानि । ग्यारहते छब्बीसलगि, वरण दुपदतुक एक । सो शिर दै बहुछंददल, परे प्रबंध विवेक॥ भेदछंद दण्डकनिको, दोऊ पारावार । वरणन पंथ बताइये, दीन्हो मति अनुसार॥ सत्रहसै निन्यानवे, मधुवदि नवैक बिंदु । दास कियो छंदोर्णव सुमिरि साँवरो इंदु ॥ घने दिननको ग्रंथ यह बिगरचो हतो बनाइ । ताहि सुधारचो शुद्ध करि, दुर्गादत्त चितलाइ ॥ आदौ जैपुर नगरको अब काशीमें वास । भाषा संस्कृत दुहुनमें, राखहुं अति अभ्यास ॥ गौड द्विजवर जाहिरो, दुर्गादत्त सुनाम । प्राचीननके ग्रंथको, शोधेहुँ चारों याम ॥

इति श्रीदासकृते छंदोर्णवे दण्डकभेदवर्णनं नाम पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

इति भिखारीदासकृतः छंदोर्णवपिंगलग्रंथः समाप्तः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई.

विक्रय्यग्रन्थाः ।

नाम.	की० रु० आ०
छन्दश्चिह्न—इसमें किस रीतिसे छन्द पृथक् २ मात्रामेलसे रचना करना यह भलीभांति दिखलाया गया है. ..	०—१
छन्दोंकुर—भाषाटीका समेत । बूंदीनिवासी पं० गंगासहायजी विरचित	०—२
प्रस्तारादिरत्नाकर—भाषाटीका अर्थात् श्लोक, छन्द, वृत्त आदिके प्रस्तारका वर्णन भली प्रकार लिखा गया है ..	०—२
श्रुतबोधवृत्तरत्नाकर—महन्मान्य पं० शिरोमणि श्रीकालिदास और श्रीभट्टकेदार विरचित मूल संस्कृत । इन दोनों ग्रंथोंके अभ्याससे अनेक प्रकारके छन्द और वृत्तादि काव्य सरल रीतिसे बनासक्ते हैं	०—६
श्रुतबोध—सान्वय—भाषाटीका । उपरोक्त रीतिसे भाषाटीकाके द्वारा छन्दज्ञान और भी शीघ्र होसक्ता है. ..	०—३

भाषा-छन्दो-ग्रन्थाः ।

अलङ्कारप्रकाश—सेठ कन्हैयालाल पोद्दारप्रणीत । यह नवाविष्कृत प्रणालीसे सुगुम्फित अलंकारविषयका हिन्दीभाषाका सर्वोत्तम देखने योग्य ग्रंथ है । जरूर संग्रह करिये. ..	१—१२
छन्दरत्नमाला—पिङ्गल—भाषाकाव्य बनानेमें अत्यन्त उपयोगी है.	०—२

नाम.	की० रु० आ०
छन्दपयोनिधि—इस "छन्दपयोनिधि" की सुपरिपाटी देखने योग्य है. इस ग्रंथने जैसा नाम पाया है वैसाही इसमें गुणहै.	०—१२
छन्दार्णवपिङ्गल—(भिखारीदासकृत) भाषाकाव्य रचना करनेमें ठीक है.	०—१२
श्रीरामचरित्रमानस—(गोस्वामितुलसीदासजीकृत) उन्हींके हाथकी हस्तलिखित प्रतिसे चतुर्थावृत्ति केसरियानिवासी कोदौरामजीके द्वारा प्राप्तकर मोटे अक्षरोंमें छापी है (नवाह्निकपाठविधिसमेत)	२—८
श्रीरामचरित्रमानस—उत्तम छोटा गुटका लवकुशकांडसमेत (पाकिटबुक सुनहरी जिल्दमें नवाह्निक पाठविधि सहित)	०—१०
तुलसीकृतरामायण—सटीक—लवकुशकांडसहित प्रत्येक दोहा चौपाईका अर्थ विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादजीमिश्रकृत भाषाटीका अति उत्तम संपूर्ण क्षेपकोंके अर्थ, माहात्म्य, तुलसीदासजीका जीवनचरित्र, गूढार्थ, रामवनवास तिथिपत्र, कोष, हनुमानजीका चित्र और सूर्यवंशका वृक्ष सहित सुन्दर जिल्द बडा अक्षर संजीवनीटीकासमेत । ग्लेज कागज	८—०
" तथा उपरोक्तालङ्कारोंसमेत रफ कागज ..	७—०
तुलसीकृतरामायण—सटीक—उपरोक्त सर्वालंकारों समेत सुन्दर जिल्द मध्यम अक्षरोंमें छपी तैयार है ग्लेज कागज	४—८
" तथा रफ कागज	४—०

नाम.	की० रु० आ०
तुलसीकृतरामायण-सटीक-उपरोक्त अलंकारों समेत संजीवनी टीका सहित । बारीक गुटका मुसाफिरीमें संग रखने योग्य इसकी शोभा देखनेही लायक है	२—४
तुलसीकृतरामायण-बडे टाईपका-अतिउत्तम श्लोकार्थ, गूढार्थ, प्रसंगार्थ, छन्दार्थ, अष्टम लवकुशकांड, इतिहास, तुलसीदासजीका जीवनचरित्र, रामचंद्रजीके बनवासकी तिथिपत्र, दृष्टांत, बरवारामायण और ३८०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण क्षेपक और कोषभी हैं । ग्लेज कागज ..	६—०
,, तथा रफ कागज	४—०
तुलसीकृतरामायण-क्षेपकसह मझोले टाईपका । अतिउत्तम मये श्लोकार्थ, गूढार्थ, प्रसंगार्थ, अष्टम लवकुशकांड, इतिहास, दृष्टांत, रामबनवास तिथिपत्र, तुलसीदासजीका जीवनचरित्र, बरवारामायण माहात्म्य, हनुमानजीका बडा चित्र, सूर्यवंशका वृक्ष और ३८०० टिप्पणीके सहित जिसमें संपूर्ण क्षेपक हैं ग्लेज कागज	२—०
,, तथा रफ कागज	१—८
तुलसीकृतरामायण-बारीक गुटका । श्लोकार्थ, गूढार्थ, प्रसंगार्थ, छंदार्थ, अष्टम लवकुशकांड इतिहास, दृष्टांत, रामबनवास तिथिपत्र, बरवारामायण और माहात्म्य सहित ३८०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण क्षेपक हैं देशाटन करनेवालोंको	